सिटी चीफ

INDORE

वर्ष-15, अंक-99
पृष्ठ-8 मूल्य 2 रूपया

सम्पूर्ण भारत मे चर्चित हिन्दी अखबार

CITYCHIEFSENDMENEWS@GMAIL.COM

इंदौर, रविवार 14 जुलाई 2024


**आज का विचार**

जिंदगी का रास्ता कभी बना बनाया नही मिलता है..स्वयं को बनाना पड़ता है...जिसने जैसा मार्ग बनाया उसे वैसी ही मंजिल मिलती है...

## इंदौर में शंख बजाकर पौधरोपण अभियान शुरू, रिकॉर्ड बनेगा

# इंदौरी रचेंगे इतिहास

### 11 लाख पौधे लगाकर तोड़ेंगे असम का रिकॉर्ड, गृहमंत्री शाह भी शामिल होंगे

*मध्यप्रदेश के इंदौर में रविवार को रिकॉर्ड 11 लाख पौधे रोपे जा रहे हैं। यह कार्यक्रम क्स्स्न रेवती रेंज पर सुबह 6 बजे से शुरू हुआ। जिसके कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी शामिल होंगे। 11 लाख पौधों का रोपण कर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने की तैयारी की जा रही है। इस दौरान मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, संभागायुक्त दीपकसिंह, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, कलेक्टर आशीषसिंह, निगमायुक्त शिवम वर्मा ने पौधारोपण की शुरुआत की। शुरुआत करने से पहले कैलाश विजयवर्गीय ने पूजापाठ भी की। बता दें, इससे पहले सितंबर 2023 में जनभागीदारी से असम में 9 लाख 26 हजार पौधे लगाने का रिकॉर्ड है। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए रविवार 14 जुलाई को 50 हजार से अधिक लोग पहुंचकर पौधरोपण करेंगे और इसे वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाएंगे। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए रविवार 14 जुलाई को 50 हजार से अधिक लोग पहुंचकर पौधरोपण करेंगे और इसे वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाएंगे। बता दें कि पुराना रिकॉर्ड 9 लाख 26 हजार पौधे लगाने का असम का है। इसके बाद आज 14 जुलाई से इंदौर वर्ल्ड रिकॉर्ड का इतिहास बनाएगा।*







**100 कैमरों से रहेगी नजर**
**20 करोड़ की लागत के पेड़ मिले हैं दान में**
**300 ट्रकों में भरकर लाए गए पेड़**
**46 दिनों में बनी है योजना**

### विश्व का सबसे बड़ा जनभागीदारी का अनूठा कार्यक्रम

51 लाख पौधारोपण और 11 लाख पौधारोपण के वर्ल्ड रिकॉर्ड की कल्पना 27 मई को की गई थी। 46 दिनों की मेहनत और समर्पित लोगों की टीम की वजह से हम आज इस अहम मुकाम पर पहुंच गए हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा जनभागीदारी का अनूठा कार्यक्रम है। रेवती रेंज में जो वन आकार लेगा वह पूरे शहर की अनमोल संपति होगी। इन वृक्षों से हमारे बच्चों का भविष्य जुड़ा हुआ है। आने वाले समय में यह इंदौर शहर और आसपास के इलाकों का बड़ा पिकनिक स्पॉट बनेगा। यहां पर मधुकामिनी के 9 लाख पोधों का रोपण किया जाएगा, जिससे पहाड़ी और आसपास उसके फूलों की खुशबु से वातावरण काफी सुगंधित और सकारात्मक ऊर्जा वाला होगा। यहां पर विभिन्न प्रजातियों के पौधों के रोपण से एक बेहतर इकोसिस्टम तैयार होगा और विभिन्न प्रजातियों की चहचहाहट यहां पर पिकनिक मनाने वालों को आकर्षित करेगी।

### उत्तरप्रदेश में फिर बड़ा फेरबदल

## 11 आईएएस अफसरों के तबादले 5 जिलों के कलेक्टर भी बदले

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने देर रात 11 आईएएस अफसरों के तबादले किए हैं। अयोध्या समते 5 जिलों के कलेक्टर भी बदले गए। अयोध्या डीएम की जिम्मेदारी अब चंद्र विजय सिंह को सौंपी गई है। इंद्रमणि त्रिपाठी डीएम औरैया की कमान संभालेंगे। सोनभद्र का डीएम बद्रीनाथ सिंह को बनाया गया है। दिव्या मित्तल को डीएम देवरिया और निधि श्रीवास्तव को डीएम बदायूं की जिम्मेदारी सौंपी है। नीतीश कुमार को एमडी दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम की जिम्मेदारी मिली है।

## जम्मू-कश्मीर के एलजी की शक्तियां बढ़ीं, दिल्ली की तरह ट्रांसफर-पोस्टिंग में मंजूरी जरूरी

**दिल्ली/श्रीनगर।** केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल (एलजी) की प्रशासनिक शक्तियां बढ़ा दी हैं। दिल्ली की तरह अब जम्मू-कश्मीर में राज्य सरकार एलजी की मंजूरी के बिना अफसरों की पोस्टिंग और ट्रांसफर नहीं कर सकेगी। गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 की धारा 55 के तहत बदले हुए नियमों को नोटिफाई किया है, जिसमें एलजी को ज्यादा ताकत देने वाली धाराएं जोड़ी गई हैं। उपराज्यपाल के पास अब पुलिस, कानून व्यवस्था और ऑल इंडिया सर्विस (अकर) से जुड़े मामलों में ज्यादा अधिकार होंगे। केंद्र ने सिर्फ व्यापार नियमों के लेनदेन में संशोधन किया गया है। जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 में बाकी चीजों का जिक्र पहले से ही था। हालांकि एजेंसी ने गृह मंत्रालय का जो नोटिफिकेशन जारी किया है, उसमें पहले के प्रावधान और 12 जुलाई को किए गए बदलावों के बीच स्पष्ट अंतर की जानकारी नहीं दी गई है। जम्मू-कश्मीर में इसी साल सितंबर तक विधानसभा चुनाव होने हैं। ताजा फैसले के बाद राज्य में सरकार किसी भी पार्टी की बने, लेकिन अहम फैसले लेने की शक्तियां एलजी के पास ही रहेंगी।

## सीएम डॉ. यादव ने मुंबई में बताई एमपी में निवेश की संभावनाएं




**भोपाल।** मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को मुंबई के ताज महल होटल में जीआईएस समिट को लेकर उद्योगपतियों के साथ राउंड टेबल चर्चा की। उन्होंने इन्वेस्टर अपॉर्चुनिटी मध्य प्रदेश कार्यक्रम में उद्योगपतियों एवं प्रतिनिधियों से वन टू वन चर्चा कर उन्हें मध्य प्रदेश में हर क्षेत्र में निवेश की अपार संभावनाओं से अवगत कराया। सीएम ने कहा कि मध्य प्रदेश पर्यटन, फार्मा, डेयरी और कृषि जैसे कई सेक्टर्स में निवेश की अपार संभावनाओं के साथ देश का हृदय स्थल भी है, जहां से देशभर में आवागमन सुगम है। शानदार इन्फ्रास्ट्रक्चर, प्राकृतिक, भौगोलिक, खनिज एवं वन संपदा के साथ मध्य प्रदेश सभी उद्योगपतियों एवं निवेशकों का हृदय से स्वागत करता है। उन्होंने कहा कि यही कारण है कि एनर्जी, टूरिज्म, हेल्थ, माइनिंग जैसे सभी सेक्टर में समान रूप से निवेश की बड़ी संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि हमने अपने बजट में भी इसकी गुंजाइश की है और आने वाले समय में भी लगातार प्रोत्साहन देंगे। उद्योगपतियों के साथ चर्चा में मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश में सभी सेक्टर में निवेश के अनकूल माहौल है। इस अवसर पर उन्होने सत्र को संबोधित किया साथ ही उद्योगपतियों से राउंड टेबल मीटिंग एवं वन-टू-वन चर्चा भी की। उन्होंने बताया कि निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए आगामी 20 जुलाई को जबलपुर में इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया जा रहा है और इसमें शिरकत करने के लिए उद्योगपतियों को निमंत्रण दिया। इसी के साथ अगले साल फरवरी में भोपाल में होने वाली ग्लोबल इंडस्ट्रियल समिट को लेकर भी चर्चा हुई।

**भारत विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर** - मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के 10 वर्षों के नेतृत्व में भारतीयों का स्वाभिमान लौटा है। अब हम कई क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हैं और विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हैं। डॉ मोहन यादव ने मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि ह्यमुझे प्रसन्नता है कि मध्यप्रदेश में लगातार निवेश बढ़ रहा है। आज हमने बड़े पैमाने पर उद्योगपतियों को आमंत्रित किया है। भारत की जीडीपी बढ़ाने में मध्यप्रदेश पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि डॉ यादव ने कहा कि उद्योग, व्यापार, व्यवसाय की दृष्टि से मध्यप्रदेश में निवेश के लिए अनुकूल माहौल बना है। यही कारण है कि एनर्जी, टूरिज्म, हेल्थ, माइनिंग जैसे सभी सेक्टर में समान रूप से निवेश की बड़ी संभावनाएं हैं। हमने अपने बजट में भी इसकी गुंजाइश की और आने वाले समय में लगातार प्रोत्साहन दे रहे हैं। हम अलग-अलग क्षेत्र की अलग अलग समिट भी करने जा रहे हैं।ह्न सीएम ने कहा कि आज मुंबई में बड़े पैमाने पर उद्योगपतियों को आमंत्रित किया गया। मध्यप्रदेश सरकार उनका स्वागत करती है।

## सिर्फ दुर्लभ केस में ही जमानत के आदेश पर लगे रोक

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान जमानत पर रोक को लेकर अहम टिप्पणी की। शीर्ष अदालत ने कहा कि जमानत के आदेश पर रोक दुर्लभ और असाधारण मामलों में ही लगनी चाहिए। कोर्ट ने ये भी कहा कि अगर जमानत के आदेश पर रोक लगाते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का हनन होता है तो ये विनाशकारी होगा। जस्टिस अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने ये टिप्पणी की। परविंदर सिंह खुराना की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट दिल्ली हाईकोर्ट ने एक मामले में परविंदर सिंह खुराना की जमानत पर रोक लगा दी थी। यही नहीं ये मामला एक साल से ज्यादा समय तक लंबित रहा। सुप्रीम कोर्ट ने 7 जून को हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी थी। पीठ ने कहा कि अदालतों को केवल दुर्लभ और असाधारण मामलों में ही जमानत के आदेश पर रोक लगानी चाहिए, जैसे कि कोई आतंकवादी मामलों में शामिल हो। इसके अलावा जहां आदेश की अवहेलना हुई हो या फिर कानून के प्रावधानों को दरकिनार किया गया हो।

### 16 वर्ष बीत गए सिर्फ 481 रूरल कोर्ट ही बन पाए, 6000 की है जरूरत

# अभी दूर की कौड़ी है सस्ता, सुलभ न्याय!



**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि ग्रामीण इलाकों में सस्ती और सुलभ न्याय व्यवस्था का सपना अभी भी अधूरा है। लाखों लंबित मामलों की वजह से उन्हें इंसाफ मिलने में देरी हो रही है। सुप्रीम कोर्ट ने यह बात ग्रामीण अदालतों की स्थापना के लिए 16 साल पुराने कानून पर राज्यों की निष्क्रियता को देखते हुए कही है।

सुप्रीम कोर्ट में एनजीओ नेशनल फेडरेशन ऑफ सोसाइटीज फॉर फास्ट जस्टिस की तरफ से पेश हुए वकील प्रशांत भूषण ने बताया कि देश में 6,000 से ज्यादा ग्राम न्यायालय होने चाहिए थे, लेकिन अभी तक सिर्फ 481 ही बने हैं। इनमें से भी सिर्फ 309 ही काम कर रहे हैं। जस्टिस बी आर गवई और जस्टिस के वी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि निचली अदालतों में पहले से ही 4 करोड़ से ज्यादा केस लंबित हैं। ऐसे में ग्राम न्यायालयों की मदद से निचली अदालतों का बोझ कम किया जा सकता है और ग्रामीण लोगों को आसानी से न्याय मिल सकता है। अडिशनल सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने अदालत को बताया कि केंद्र सरकार मौजूदा योजना के तहत राज्यों को वित्तीय मदद देने को तैयार है। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्यों के मुख्य सचिवों और हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल को ग्राम न्यायालयों की स्थिति, उनके पास उपलब्ध संसाधनों और कर्मचारियों की जानकारी देने का निर्देश दिया है।

**क्या है ग्राम न्यायालय योजना?** जस्टिस गवई और जस्टिस विश्वनाथन ने कहा, न्याय के अधिकार में जल्द और सस्ता न्याय पाना भी शामिल है। ग्राम न्यायालय लोगों को उनके घर के पास सस्ता न्याय मुहैया कराएंगे और निचली अदालतों में लंबित मामलों के बोझ को कम करने में मदद करेंगे। ग्राम न्यायालय अधिनियम, 2008 के तहत हर ग्राम पंचायत या एक से अधिक ग्राम पंचायतों के समूह के लिए एक ग्राम न्यायालय की स्थापना का प्रावधान है। ग्राम न्यायालयों को दीवानी और फौजदारी दोनों तरह के मामलों की सुनवाई करने का अधिकार होता है। इनमें जमीन विवाद, संपत्ति विवाद, पारिवारिक विवाद, छोटे-मोटे अपराध शामिल हैं। ग्राम न्यायालयों को 2 लाख रुपये तक के दीवानी मामलों और छोटे अपराधों में सजा सुनाने का अधिकार होता है।

**दूसरे शहरों में कोर्ट के नहीं काटने होंगे चक्कर**- ग्राम न्यायालयों का उद्देश्य लोगों को उनके घर के पास ही सस्ता, सुलभ और त्वरित न्याय प्रदान करना है। इससे लोगों को दूर-दराज के इलाकों में न्यायालयों के लिए चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे और उन्हें जल्द से जल्द न्याय मिल सकेगा। हालांकि, ग्राम न्यायालयों की स्थापना में कई चुनौतियां हैं। सबसे बड़ी चुनौती है न्यायालयों के लिए बुनियादी सुविधाओं की कमी। इसके अलावा, न्यायाधीशों और अन्य कर्मचारियों की कमी भी एक बड़ी समस्या है।

## महाराष्ट्र को दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनाएंगे : मोदी

**मुंबई।** लोकसभा चुनाव के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहली बार मुंबई पहुंचे। इस दौरान उन्होंने 29,400 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली अलग-अलग परियोजनाओं का शुभारंभ और शिलान्यास किया। इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने जनता को संबोधित किया। पीएम मोदी ने कहा, लोग जानते हैं कि एनडीए सरकार ही स्थिरता और स्थायित्व प्रदान कर सकती है। तीसरी बार शपथ लेने के बाद मैंने कहा था कि तीसरे कार्यकाल में एनडीए सरकार तीन गुना तेजी के साथ काम करेगी। पीएम मोदी ने आगे कहा, महाराष्ट्र के पास गौरवशाली इतिहास है। महाराष्ट्र के पास सशक्त वर्तमान है और महाराष्ट्र के पास समृद्ध भविष्य का सपना है। महाराष्ट्र वह राज्य है, जिसकी विकसित भारत के निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका है। महाराष्ट्र के पास उद्योग, कृषि और आर्थिक क्षेत्रों की ताकत है। इसी ताकत ने मुंबई को देश की आर्थिकी का केंद्र बनाया है। इसी ताकत से महाराष्ट्र को दुनिया का सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनाना है।

# इस बार एक महीने देरी से आएगा ला नीना

### देश के ज्यादातर राज्यों में मॉनसून ने दी दस्तक, मॉनसून पर नहीं होगा ला नीना का असर



**नई दिल्ली।** अमेरिकी मौसम एजेंसियों का कहना है कि ला नीना का असर इस बार देरी से देखने को मिल सकता है। ला नीना के कारण भारत में मॉनसून में अच्छी बारिश होती है। पहले उम्मीद थी कि ला नीना अगस्त में आएगा, लेकिन अब यह सितंबर में आने की संभावना है। यानी इस बार ला नीला में करीब एक महीने की देरी होने के आसार हैं। हालांकि, एक्सपर्ट्स का मानना है कि ला नीना में अनुमानित देरी के कारण जून-सितंबर सीजन में मॉनसून की बारिश में कोई बड़ी कमी नहीं आने वाली है। अभी देशभर में मॉनसून सामान्य से 3त्न कम है, लेकिन अगले दो हफ्तों में इसके आंकड़े में सुधार होने की उम्मीद है। अमेरिका के नेशनल ओशनिक एंड एटमोस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन ने बताया है कि अगस्त-सितंबर-अक्टूबर में 70% संभावना है कि ला नीना आएगा। इसका मतलब है कि सितंबर में ला नीना आ सकता है। पिछले महीने ठडअअ ने कहा था कि अगस्त में ला नीना आने की 65% संभावना है, लेकिन अब यह घटकर 48% रह गई है। ला नीना के कारण प्रशांत महासागर का पानी सामान्य से ज्यादा ठंडा हो जाता है, जिससे हवाओं का रुख बदलता है और पूरी दुनिया के मौसम पर असर पड़ता है। ला नीना के उलट, अल नीनो के दौरान प्रशांत महासागर का पानी सामान्य से ज्यादा गर्म हो जाता है। ला नीना से भारत में मॉनसून में अच्छी बारिश होती है, जबकि अल नीनो के कारण बारिश कम होती है।

**ला नीना में देरी से चिंता करने की जरूरत नहीं** मौसम वैज्ञानिक और केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के पूर्व सचिव एम. राजीवन ने कहा, ला नीना में देरी से चिंता करने की जरूरत नहीं है। मॉनसून के लिए जरूरी है कि नीनो 3.4 (प्रशांत महासागर का एक क्षेत्र) में समुद्र की सतह का तापमान शून्य से नीचे चला जाए। फिलहाल, यह शून्य से थोड़ा ऊपर है, लेकिन अगस्त तक इसके शून्य से नीचे जाने की उम्मीद है। ऐसा होने पर, मॉनसून आमतौर पर मबूत होता है।

## सिंगल कॉलम

### सड़क पर पलटे ट्रक से टकराया डंपर, कैबिन में दबने से चालक की मौत

**इंदौर।** सड़क पर अचानक ट्रक पलटने के कारण पीछे आ रहा डंपर उससे टकरा गया। घटना में डंपर चालक की दबने से मौत हो गई। किशनगंज पुलिस के अनुसार घटना फोर लेन स्थित टीही गांव पुलिया के पास की है। एक ट्रक चालक ने लापरवाही पूर्वक ट्रक चलाते हुए सड़क पर ट्रक पलटा दिया। कुछ देर बाद पीछे से आ रहा एक डंपर उससे टकराया, जिससे डंपर का अगला हिस्सा दब गया। डंपर चालक पवन सिंह केबिन में दब गया। जैसे तैसे उसे बाहर निकाला लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। पुलिस टीम ने क्रेन की मदद से दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को सड़क से हटवाया। मामले में पुलिस ने ट्रक चालक पर केस दर्ज किया है।

### ट्रेन की चपेट में आने से युवती की मौत

**इंदौर।** लक्ष्मीबाई नगर रेलवे स्टेशन के एक नंबर प्लेटफार्म पर पटरी पार करते समय युवती ट्रेन की चपेट में आ गई। घटना में उसकी मौत हो गई। जीआरपी पुलिस के अनुसार युवती का नाम भानु प्रिया उम्र 20 साल है। शुक्रवार रात को लक्ष्मीबाई नगर स्टेशन पर पटरी पार करते समय भोपाल-अंबेडकर नगर पैसेंजर ट्रेन की चपेट में आ गई। ट्रेन से टकराकर युवती दूर जा गिरी। दोनों पैर और एक हाथ कट गया। उसने मौके पर ही दम तोड़ दिया। पुलिस ने मर्ग कायम किया है। मामले की जांच की जा रही है। युवती के द्वारा पिता की मौत के बाद नशा करने की बात भी कही जा रही है।

### पोर्टल बंद होने से निगम को 100 करोड़ का नुकसान

**इंदौर।** नगर निगम को एमपीईनगरपालिका पोर्टल बंद होने से 100 करोड़ का नुकसान उठाना पड़ा। पोर्टल बंद होने से जनता टैक्स नहीं भर पाई और नगर निगम ने टैक्स के लिए जो टारगेट सेट किया था वह पूरा नहीं हो पाया। नगर निगम को टैक्स से 785 करोड़ ही मिल सके। नगर निगम में अपर आयुक्त (वित्त विभाग) देवधर दरवाई ने बताया कि 2023 - 2024 में नगर निगम को जनता के द्वारा दिए गए टैक्स से 785 करोड़ रुपए की आय प्राप्त हुई है। हमें उम्मीद थी कि इस साल हमें लगभग 900 करोड़ रुपए टैक्स मिल सकता है। पोर्टल में आई खामियों की वजह से टैक्स का संग्रहण गिरा है। हालांकि यह टैक्स आने वाले समय में नगर निगम के पास आ जाएगा और अगले साल का टैक्स संग्रहण बहुत अधिक रहेगा। दरवाई ने बताया कि टैक्स कलेक्शन बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए गए थे। हमने कई क्षेत्रों में प्रापर्टी गाइड लाइन के रेट सुधारे, लोगों को आनलाइन टैक्स भरने के लिए प्रोत्साहित किया और कई व्यवस्थाओं में बदलाव किए। हमें पूरी उम्मीद थी कि इस साल सर्वाधिक टैक्स मिलेगा। दरवाई ने बताया कि आने वाले समय में नगर निगम का टैक्स कलेक्शन एक हजार करोड़ के आसपास जा सकता है। एमपीईनगरपालिका पोर्टल दिसंबर में चलना बंद हुआ था। इसके बाद इसे सुधारने में दो से तीन महीने लगे लेकिन फिर भी लोग टैक्स जमा नहीं कर पाए। बीच में तो जिन लोगों ने टैक्स जमा किया था उनकी जानकारी भी पोर्टल से गायब हो गई। अब पोर्टल में लोग टैक्स भर रहे हैं लेकिन फिर भी उन्हें कई तरह की परेशानियां सामने आ रही हैं। मप्र के इस पोर्टल पर दिक्कत आने के बाद इंदौर नगर निगम ने निर्णय लिया है कि अब वह अपना खुद का पोर्टल बनाएगा। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि मप्र के पोर्टल पर सभी जिलों का लोड रहता है और इंदौर की व्यवस्था को सुचारू रूप से चालू रखने के लिए हमने अपना पोर्टल बनाने का निर्णय लिया है। इसके लिए हमने राज्य स्तर पर अनुमति भी ले ली है। भोपाल में पहले से ही खुद का पोर्टल बना हुआ है और अब इंदौर भी अपने जिले का अलग पोर्टल बनाने जा रहा है।

### 280 टन का बोझ उठाकर लोड टेस्ट में पास हुआ खजराना ब्रिज

**इंदौर।** शहर के खजराना ब्रिज लोड टेस्ट में पास हो गया। 24 घंटे तक ब्रिज की भुजा पर 280 टन का बोझ रखा गया। इसके बाद ब्रिज की भारवहन क्षमता को अफसरों ने परखा। यह ब्रिज 280 टन के हिसाब से डिजाइन हुआ है। अब जल्दी ही ब्रिज की एक भुजा से ट्रैफिक शुरू हो जाएगा। डेढ़ साल पहल इंदौर के खजराना चौराहे पर इस ब्रिज का निर्माण शुरू हुआ था। ब्रिज पर 50 करोड़ रुपये इंदौर विकास प्राधिकरण ने खर्च किए है। ब्रिज के लोड टेस्ट के तहत कुल 260 टन वजन रखना था। इसके लिए रेती से भरे डंपरों का उपयोग किया गया। पहले 24 प्रतिशत लोड रखकर जांच की गई। फिर धीरे धीरे 50, 75 और 100 प्रतिशत लोड ब्रिज पर रखा गया। शुक्रवार सुबह तक ब्रिज पर 270 वजन लेकर डंपर खड़े रहे। भार वाहन क्षमता जांचने के लिए ब्रिज के निचले हिस्से में उपकरण लगाए गए थे। लोड हटाने के लिए भी यहीं प्रक्रिया अपनाई गई। कलर और विद्युत सज्जा में दस दिन का समय लगेगा। इसके बाद ब्रिज की एक भुजा से आवागमन शुरू हो जाएगा। ब्रिज की दूसरी भुजा पर चार माह के भीतर शुरू हो जाएगा ट्रैफिक ब्रिज की एप्रोच रोड का काम भी चल रहा है। इस चौराहे से मेट्रो ट्रेक भी गुजर रहा है। इस कारण ब्रिज की दोनो भुजाएं अलग-अलग बनाई गई।

## बिजली आपूर्ति बेहतरी के लिए सवा तीन माह में सात हजार ट्रांसफार्मर जारी

# रबी सीजन में 7500 मेगावाट पहुंच सकती है बिजली की मांग

**सिटी चीफ इन्दौर**

मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा ट्रांसफॉर्मर के स्थानीय स्तर पर मेंटेनेंस यानी रिपेयरिंग के लिए लोकल रिपेयरिंग यूनिट (एलआरयू) लगातार काम कर रही है। इन यूनिटों से कंपनी को ट्रांसफॉर्मर के असफलता यानी फेल रेट घटाने में आशातीत सफलता मिली है।

सितंबर अंत से रबी सीजन प्रारंभ होने वाला है। इसकी तैयारी के लिए कंपनी क्षेत्र के इंदौर सहित सभी 15 जिलों में इस तरह की यूनिटों को पूर्ण क्षमता के साथ चलाने के निर्देश दिए गए है, ताकि ट्रांसफॉर्मर की मरम्मत समय पर हो एवं रबी सीजन के लिए ट्रांसफॉर्मर की उपलब्धता व्यापक हो सके। इधर कंपनी ने जारी वित्तीय वर्ष में अप्रैल से लेकर अब तक सात हजार ट्रांसफॉर्मर जारी किए हैं।

मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध निदेशक अमित तोमर ने बताया कि ट्रांसफॉर्मर की उपलब्धता, समय पर

उनकी मरम्मत पर पूर्ण ध्यान दिया जा रहा है। इसके लिए मेंटेनेंस संकाय, भंडार संकाय, मैदानी अधिकारी अधीक्षण यंत्री, कार्यपालन यंत्री सक्रियता से जुटे हुए है। तोमर ने बताया कि एलआरयू का कार्य गुणवत्ता से करने एवं 1 अगस्त से पूर्ण क्षमता के साथ चलाने के निर्देश दिए गए है, ताकि रबी सीजन के लिए ट्रांसफॉर्मर की उपलब्धता में सुगमता की स्थिति बनी रहे। तोमर ने बताया कि इंदौर जिले में इंदौर ग्रामीण, महू, देपालपुर, एवं बेटमा क्षेत्र के लिए एलआरयू है।

इसी तरह अन्य जिलों में भी एलआरयू की स्थापना से ट्रांसफॉर्मर के फेल रेट घटाने में मदद मिली है। रबी सीजन के लिए प्रति वर्ष 15 हजार से ज्यादा ट्रांसफार्मर का इंतजाम किया जाता है, ताकि सीजन में कोई परेशानी नहीं हो। इसलिए स्टोर में पर्याप्त मात्रा में ट्रांसफॉर्मर रखने के साथ ही जिन ट्रांसफॉर्मर में कोई छोटी मोटी दिक्कत होती है, उन्हें एलआरयू में ठीक कराया जाता हैं। इस वर्ष रिकार्ड तोड़ गर्मी की अवस्था में शहरी क्षेत्रों में काफी अतिरिक्त ट्रांसफार्मर लगाए गए, जहां ट्रांसफार्मर फेल हुए वहां भी समय पर बदला गया। इस तरह करीब सवा तीन माह में सात हजार ट्रांसफार्मर जारी किए गए हैं। तोमर ने बताया कि इस वर्ष रबी सीजन के दौरान कंपनी की अधिकतम बिजली मांग 7500 मेगावॉट तक पहुंच सकती है, इसी के मद्देनजर कंपनी स्तर पर तैयारी की जा रही हैं। पिछले वर्ष अधिकतम मांग 7200 मेगावॉट के करीब थी।

## सालभ पहले जामनगर से लाया गया था जोड़ा, वन्य प्राणियों का ब्रीडिंग सेंटर भी बना प्राणी संग्रहालय

# चिड़ियाघर में मीर कैट परिवार में आए नन्हे मेहमान

**सिटी चीफ इन्दौर**

शहर के चिड़ियाघर में शुक्रवार को साउथ अफ्रीकी मीर कैट ने दो बच्चों को जन्म दिया। चिड़ियाघर में अब मीर कैट की संख्या चार से बढ़कर छह हो गई है। चिड़ियाघर प्रभारी डॉ. उत्तम यादव ने बताया कि शहर का चिड़ियाघर अब केवल वन्य प्राणियों को रखने तक का ही केंद्र नहीं रहा, बल्कि यह वन्य प्राणियों का ब्रीडिंग सेंटर भी बन गया है। बता दें कि मीर कैट को एक साल पहले जामनगर से एनिमल एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत लाया गया था।

डॉ. यादव ने बताया कि करीब एक वर्ष पहले जामनगर से एनिमल एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत साउथ अफ्रीकी मीर कैट के दो जोड़े लेकर आए थे। शुक्रवार को मीर कैट ने दो बच्चों को जन्म दिया है। दोनों ही बच्चे स्वस्थ हैं। फिलहाल बच्चों को दर्शकों से दूर रखा गया है। डॉक्टरों द्वारा विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अब चिड़ियाघर में मीर कैट की संख्या छह हो गई है।

मीर कैट दक्षिण अफ्रीका में पाया जाने वाला एक छोटा नेवला है। इसकी विशेषता

इसकी बनावट है। मखमली फर वाला यह छोटा सा प्राणी अपनी शारीरिक संरचना के लिए हमेशा से ही आकर्षण का केंद्र रहा है। इसका सिर चौड़ा होता है और इसकी आंखें बड़ी-बड़ी होती है। दिलचस्प बात तो यह है कि इसका शरीर छोटा होता है जिससे आंखें बड़ी होती है। नुकीली थूथन, लंबी टांगें, पतली पूंछ और चितकबरे कोट का पैटर्न इनकी पहचान है। बात अगर इसके कद की करें, तो इसके शरीर की लंबाई करीब 9.4 से 13.8 इंच तक होती है। इनका वजन एक किलो तक होता है। कोट हल्के भूरे से पीले-भूरे रंग का होता है। इस मीर कैट को समूह में रहना ही पसंद है।

## किडनी की बीमारी के कारण सुपर स्पेशिएलिटी में किया था शिफ्ट, चाचा नेहरू अस्पताल किया रैफर

# युग पुरुष आश्रम के बच्चे की हालत में सुधार

**सिटी चीफ इन्दौर**

युग पुरुष आश्रम केस में पिछले दिनों किडनी की बीमारी के कारण चाचा नेहरू अस्पताल से सुपर स्पेशिएलिटी रेफर किए गए 15 वर्षीय सुभाष की हालत में सुधार है। उसकी किडनी संबंधी तकलीफ अब खत्म हो गई है। उसका क्रिएटिनिन भी नॉर्मल है। शनिवार को उसे फिर से चाचा नेहरू अस्पताल रेफर किया गया।

मानसिक रूप से दिव्यांग इस बच्चे के इलाज के लिए डॉक्टरों की टीम जुटी थी। उसकी लगातार मॉनिटरिंग की जा रही थी। चूंकि व ह ठीक से बोल नहीं पाता इसके चलते परेशानी भी हुई। डॉक्टरों ने उसकी कई प्रकार की जांच की और फिर इलाज शुरू किया। करीब एक हफ्ते बाद उसकी हालत में सुधार हुआ। अभी उसे किडनी की तकलीफ

नहीं है लेकिन बुखार है, इसके चलते उसे फिर से चाचा नेहरू अस्पताल रेफर किया गया है।

**घर जाने के लिए आश्रम से भागा था बालक**

उधर, युग पुरुष आश्रम से अखण्ड परमानंद हॉस्पिटल रेफर करने के बाद भागा नाबालिग शुक्रवार को बाणगंगा में मिल गया। उससे पूछताछ की जा रही है। वह आश्रम की खिड़की से कूदकर भागा था। बालक के माता-पिता नहीं है। उसने बताया कि वह झांसी में अपने बहन के घर जाना चाहता था। भागने के बाद पैसे नहीं होने पर वह इधर-उधर भटकता रहा।

## सीसीटीवी में कैद हुआ बदमाश, केस दर्ज

# छावनी अनाज मंडी से 20 क्विंटल डालर चना चोरी

**सिटी चीफ इन्दौर**

छावनी अनाज मंडी के एक गोदाम से बदमाश 20 क्विंटल चना चुरा ले गया। सीसीटीवी फुटेज में ठेले पर चना रखकर ले जाते हुए बदमाश कैद हुआ है। पुलिस उसकी तलाश में जुटी है। रावजी बाजार थाने में फरियादी कन्हैया गर्ग निवासी नौलखा मेन रोड की शिकायत पर चोरी का केस दर्ज हुआ है। उनका नई अनाज मंडी पुरानी स्टेट बैंक के पास छावनी में ऑफिस और गोदाम है। सुबह जब अपने ऑफिस पहुंचे तो चोरी का पता लगा। गोदाम पहुंचे तो गोदाम के

दरवाजे टूटे थे। बदमाश ने दरवाजे को चौड़ा कर अंदर जाने का रास्ता बनाया और गोदाम में रखे 20 क्विंटल काबुली डॉलर चना ठेले पर रखकर ले गया। सीसीटीवी कैमरे के फुटेज पुलिस को सौंपे हैं। फुटेज के आधार पर बदमाश का पता लगाने में पुलिस जुटी है।

## परीक्षा से एक दिन पहले 2 हजार तक में बेचा, 1 अगस्त को दोबारा होगी एग्जाम

# प्राइवेट यूनिवर्सिटी में बीटेक बीसीए का पेपर लीक

**सिटी चीफ इन्दौर**

शहर की एक प्राइवेट यूनिवर्सिटी में बीटेक और बीसीए सेकेंड सेमेस्टर का पेपर लीक हो गया।शनिवार को होने वाले दोनों कोर्स के पेपर एक दिन पहले शुक्रवार को ही स्टूडेंट्स तक पहुंच गए। स्टूडेंट्स को 1500 से 2 हजार रुपए में पेपर बेचने की बात सामने आई है। अभाविप ने प्राइवेट यूनिवर्सिटी में हंगामा किया। यूनिवर्सिटी प्रशासन ने दोनों पेपर दोबारा आयोजित करने का निर्णय लिया है।

शनिवार सुबह 11 से दोपहर 2 बजे तक बीटेक सीएसई सेकेंड सेमेस्टर का कम्प्यूटर आर्किटेक्चर और बीसीए सेकेंड सेमेस्टर का डाटा स्ट्रक्चर की एग्जाम थी। एग्जाम के बाद जब दोनों पेपर का मिलान कर चेक किया तो एक जैसे पाए गए। इस पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने यूनिवर्सिटी कैंपस में प्रदर्शन किया। अभाविप महानगर मंत्री सार्थक जैन और छात्र नेता बादल सोलंकी ने यूनिवर्सिटी प्रशासन से मामले में दोषी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। रजिस्ट्रार ने आश्वस्त किया कि मामले की जांच कर कार्रवाई करेंगे। दोनों कोर्स के लीक हुए पेपर की एग्जाम फिर से आयोजित करवाने की बात भी कही है।

**दोनों पेपर री-शेड्यूल**

प्राइवेट यूनिवर्सिटी के अधिकारियों ने बताया कि स्टूडेंट्स की तरफ से पेपर लीक को लेकर शिकायत की गई है। उनकी शंका को दूर करने के लिए बीटेक और बीसीए दोनों कोर्स के पेपर री-शेड्यूल किए हैं। दोनों की एग्जाम अब 1 अगस्त को होगी। एग्जाम कमेटी मामले की जांच करेगी। इसमें किसी की भूमिका सामने आती है तो दोषी के खिलाफ कार्रवाई करेंगे।

## मानसून की धीमी चाल ने किसानों के माथे पर खींची चिंता की लकीरें

# 12 इंच होना थी बारिश, अब तक सिर्फ एक इंच बरसा

**सिटी चीफ इन्दौर**

जुलाई माह में मानसून मेहरबान रहता है। इंदौर में जुलाई माह में औसतन 12 इंच बारिश हो जाती है, लेकिन इस बार 13 दिनों में सिर्फ एक इंच पानी ही बरसा है। सीजन की कुल बारिश पांच इंच हो पाई है।

मानसून की इस धीमी चाल से किसानों के माथे पर भी चिंता की लकीरें है। उन्होंने खेतों में बुआई कर दी, लेकिन पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। शनिवार को इंदौर सहित आसपास के जिलों में झमाझम बारिश की भविष्यवाणी की है। शहरवासियों को भी अब तेज बारिश का इंतजार है, ताकि गर्मी व उमस से निजात मिल सके।

इंदौर में मानसून आए 20 से दिन से ज्यादा हो चुके है, लेकिन मजबूत

सिस्टम प्रदेश में सक्रिय नहीं होने के कारण बूंदा-बांदी या रिमझिम बारिश ही शहर में हो रही है। तेज हवाएं भी इसकी एक वजह है।

**सुबह से छाए रहे बादल, बरसे नहीं**

मौसम विभाग के अनुसार बंगाल की खाड़ी से कम दबाव का क्षेत्र बन रहा है। इसके सक्रिय होने से 17 जुलाई तक तेज बारिश मध्य प्रदेश के पश्चिम हिस्से में हो सकती है। फिलहाल रिमझिम बारिश होगी। जुलाई का दूसरा सप्ताह समाप्त होने जा रहा है, लेकिन अब तक इंदौर की धरती बारिश से तरबतर नहीं हो पाई है।

13 दिनों में सिर्फ एक इंच पानी इंदर को मिला है। पिछले साल जुलाई माह में 15 इंच से ज्यादा बारिश इंदौर में हो चुकी थी। शनिवार सुबह से शहर में बादल छाए रहे लेकिन बरसे नहीं। हालांकि धूप नहीं होने से राहत जरुर है, लेकिन उमस के कारण पंखे-कूलर भी चलाना पड़ रहे है।

# आरटीओ को हटाने के लिए विधायक रामेश्वर शर्मा ने मंत्री को लिखा पत्र

**सिटी चीफ भोपाल।**

रामेश्वर शर्मा ने परिवहन मंत्री राव उदय प्रताप सिंह को पत्र लिखकर भोपाल आरटीओ जितेंद्र शर्मा को हटाने की मांग कर दी है। शर्मा ने लिखा कि शर्मा को हटाकर स्थायी रूप से क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी को पदस्थ किया जाए।

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ) भोपाल में लगातार तीसरे दिन भी कियोस्क संचालकों और एजेंटों ने हड़ताल जारी रखी। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी जितेंद्र शर्मा के नए आदेश वाहन ट्रांसफर के समय उपस्थित होना और पेपर जमा करने का विरोध किया जा रहा है। अब इस मामले में हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा ने परिवहन मंत्री को पत्र लिखकर आरटीओ को हटाने की मांग कर दी है।

भोपाल क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय में लगातार तीसरे दिन हड़ताल से आवेदकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हड़ताल के कारण आरटीओ का 20 से 25 प्रतिशत काम ही हो पा रहा है। हालांकि, परिवहन विभाग के अधिकारियों को कहना है कि हड़ताल का कोई असर नहीं हो पा रहा है। इस बीच अब हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा की भी विवाद में एंट्री हो गई। शर्मा ने परिवहन मंत्री राव उदय प्रताप सिंह को पत्र लिखकर भोपाल आरटीओ जितेंद्र शर्मा को हटाने की मांग कर दी है। शर्मा ने लिखा कि शर्मा को हटाकर स्थायी रूप से क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी को पदस्थ किया जाए। उन्होंने यातायात सलाहकार समिति भोपाल के शिकायती आवेदन पत्र के आधार पर आरटीओ को हटाने की मांग की है। उन्होंने लिखा कि परिवहन कार्यालय में तानाशाही करने पर इन्हें हटाकर अन्य किसी अधिकारी को क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी बनाया जाए।

**कम लोग पहुंचे काम कराने**

शुक्रवार को सुबह 10 बजे आरटीओ कार्यालय हर दिन की तरह खुला। हड़ताल के चलते कुछ ही लोग काम कराने के लिए पहुंचे।

आम दिनों जैसी भीड़ आरटीओ कार्यालय में नहीं दिखी। वहीं, एजेंटों का कहना है कि नए आरटीओ जितेंद्र शर्मा नए नियम बता रहे हैं। हमारा आरटीओ के काम में सीधा कोई लेना देना नहीं है। आरटीओ में ऐसे भी आवेदक हैं, जिनको नियम और ऑनलाइन आवेदन करने की जानकारी नहीं होती। ऐसे लोगों की मदद करते हैं।

# रविवार से 9 अगस्त तक बंद रहेंगे बोगदा पुल के आस-पास तीन रास्ते

**सिटी चीफ भोपाल।**

भोपाल मेट्रो रेल परियोजना के निर्माण कार्य के अंतर्गत पुल बोगदा के पास नया मेट्रो स्टेशन का निर्माण कार्य किया जाना है। इसके लिए आम लोगों की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए पुल बोगदा पर आने वाले तीनों तरफ के मार्ग को बंद कर यहां से गुजरने वाले ट्रैफिक का मार्ग परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

इस बात की सूचना निर्माण कंपनी द्वारा यातायात पुलिस को दी गई है। सुरक्षित यातायात के दृष्टिकोण से निर्माण कार्य के दौरान 14 जुलाई रविवार से नौ अगस्त तक पुल बोगदा के आसपास के तीन मार्ग यातायात के लिए बंद रहेंगे।

**ये मार्ग रहेंगे प्रतिबंधित**

भारत टाकीज से बोगदा पुल होकर प्रभात चौराहा तक।

जिंसी धर्मकांटा से बोगदा पुल होकर प्रभात चौराहा तक।

प्रभात चौराहा से (बोगदा पुल होकर) जिंसी धर्म कांटा तक एवं भारत टाकीज तक।

**ये रहेंगे वैकल्पिक मार्ग**

प्रभात चौराहा से बोगदा पुल होकर भारत टाकीज अथवा रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर छह की ओर आवागमन करने के लिए प्रभात चौराहा, परिहार चौराहा (अशोका गार्डन), 80 फीट रोड-स्टेशन बजरिया तिराहा-भारत टाकीज ओवर ब्रिज-संगम टाकीज तिराहा होकर भारत टाकीज एवं रेल्वे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर छह की ओर आवागमन कर सकेंगे।

इसी प्रकार भारत टाकीज अथवा रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर छह से प्रभात चौराहा की ओर आवागमन करने के लिए संगम टाकीज तिराहा-भारत टाकीज ओवर ब्रिज-स्टेशन बजरिया तिराहा-80 फीट रोड-परिहार चौराहा(अशोका गार्डन) से प्रभात चौराहा की ओर आवागमन कर सकेंगे।

**हल्के वाहन/दोपहिया वाहन**

मैदा मिल रोड से जिंसी धर्म कांटा होकर भारत टाकीज की ओर आवागमन करने वाले वाहन मैदा मिल रोड, स्लाटर हाउस, जिंसी धर्म कांटा, जिंसी पुलिस चौकी, नीम वाली सड़क से शिव मंदिर, पुल पातरा से भारत टाकीज की ओर आवागमन कर सकेंगे।

इसी प्रकार भारत टाकीज से मैदा मिल रोड की ओर आवागमन करने के लिए भारत टाकीज, पुल पातरा, शिव मंदिर, नीम वाली सड़क, जिंसी पुलिस चौकी, जिंसी धर्म कांटा, स्लाटर हाउस होकर मैदा मिल की ओर आवागमन कर सकेंगे।

# तालाब में फिसली कार, बड़ा हादसा टला

**सिटी चीफ भोपाल।**

भोपाल। पुराने शहर के शाहजहांबाद थाना इलाके में देर रात नूरमहल रोड स्थित बाग मुंशी हुसैन खां तालाब में एक कार गिर गई। हालांकि हादसा होते ही आसपास मौजूद लोगों ने युवक को सुरक्षित कार से बाहर निकाल लिया। इससे अनहोनी टल गई। बाद में क्रेन की मदद से कार को बाहर निकाल लिया गया। हालांकि इस मामले में थाने में कोई शिकायत नहीं की गई है।

शाहजहांबाद थाना पुलिस के मुताबिक हादसा शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात करीब डेढ बजे हुआ। घटना के समय हल्की वर्षा भी हो रही थी। तभी नूरमहल रोड पर एक कार सड़क किनारे से फिसलते हुए तालाब में उतर गई। घटना के प्रत्यक्षदर्शियों के तत्काल प्रयास करते हुए कार

चालक को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। तालाब के किनारे पानी कम रहने के कारण कार भी पूरी तरह नहीं डूब सकी थी। इस वजह से बड़ा हादसा टल गया। बाद में क्रेन की मदद से कार को भी तलाब से बाहर निकाल लिया गया।

एसआई पवन सेन ने बताया कि सुरक्षा की दृष्टि से पूर्व में तालाब के किनारे पर बनी दीवार कई स्थानों से जर्जर होकर टूट गई है। तालाब के किनारे कई लोग अपने चार पहिया वाहन भी पार्क करते हैं। तालाब में पानी कम रहने के कारण बड़ा हादसा टल गया। इस बारे में अभी कोई शिकायत नहीं की गई है।

## ठेकेदार एजेंसी ब्लैकलिस्ट, उपयंत्री निलंबित

# 60 लाख की सड़क में भ्रष्टाचार

**सिटी चीफ भोपाल।**

भोपाल के बैरसिया में रमचुरा-कचनारिया मार्ग निर्माण में भ्रष्टाचार का मामला सामने आने और लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह के निर्देश पर जांच में लापरवाही सामने आने के बाद सड़क का निर्माण करने वाली कंपनी एकेके कंस्ट्रक्शन को ब्लैकलिस्ट कर दिया गया। वहीं, विभाग के उपयंत्री मुकेश रावत को निलंबित कर दिया है।

आठ किमी की सड़क एक सप्ताह के अंदर बनाई गई थी। 60 लाख रुपये की सड़क के निर्माण में खामियां सामने आईं। मंत्री राकेश सिंह के निर्देश के बाद भोपाल के मुख्य अभियंता इंजीनियर संजय मस्के शुक्रवार को सड़क की जांच करने पहुंचे थे। जांच में सड़क की मोटाई कम पाई गई है। वहीं, सड़क निर्माण में प्रयोग किए गए मटेरियल की जांच के नमूने लैब में भेजे गए हैं। मंत्री राकेश सिंह ने कहा कि निर्माण कार्यों में किसी भी तरह की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।

**कांग्रेस ने उठाया था मुद्दा**

बता दें, बैरसिया में सड़क निर्माण में गड़बड़ी

का मुद्दा कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव ने उठाया था। उन्होंने सड़क को हाथों से उखाड़ने का एक युवक का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर सरकार के काम पर सवाल उठाए थे। इसके बाद लोक निर्माण विभाग के मंत्री राकेश सिंह ने तुरंत वीडियो का संज्ञान लेकर मामले की जांच के निर्देश दिए थे। इसके अगले ही दिन टीम सड़क का निरीक्षण करने पहुंची, जिसमें गड़बड़ी सामने आने के बाद कार्रवाई की गई है।

# इस्कॉन ने शहर में निकाली जगन्नाथ रथयात्रा, रथ खींचने उमड़े श्रद्धालु

**सिटी चीफ भोपाल।**

इस्कॉन मंदिर पटेल नगर की ओर से शनिवार को शहर में भव्य जगन्नाथ रथयात्रा निकाली गई। पुराने शहर में निकली इस रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ के रथ को खींचने के लिए बड़ी सख्या में श्रद्धालु उमड़े। भगवान जगन्नाथ, बलदेव और सुभद्रा माता रथ में विराजमान किए गए। रथ को सुंदर सुगंधित पुष्प द्वारा सजाया गया था। रथ को 100 किलो पुष्प गेंदा, मोगरा, आर्किड, गुलाब से सजाया गया था। रथयात्रा शाम चार बजे भोपाल टाकीज चौराहा से शुरू हुई, जो पुराने शहर के विभिन्न मार्गों होती हुई, नए शहर रोशनुपरा, न्यू मार्केट होते हुए प्लेटिनम प्लाजा पर पहुंचीं। भोपाल, देश के अलग-अलग शहरों के अलावा इस्कॉन से जुड़े नीदरलैंड, रसिया सहित अन्य देशों से भी कई भक्त शामिल हुए।

कृष्ण के संकीर्तन की ध्वनि में

सभी श्रद्धालु आनंद विभोर हो उठे। 500 किलो खाजा प्रसाद, रथ यात्रा में भक्तों को वितरित किया गया। रथ यात्रा का स्वागत सामाजिक संगठन व धार्मिक संगठन के लोगों द्वारा किया गया। कई जगह पुष्प वर्षा की गई।

भगवान जगन्नाथ के रथ को दुर्गा मंदिर, काली मंदिर, गुरुद्वारा, मालाबार ज्वेलर, होंडा शोरूम जैसे अनेको स्थानों में आरती के साथ स्वागत किया गया। रामेश्वर शर्मा विधायक ने भी आकर भगवान का रथ खींचा व कीर्तन में भाग लिए। जगन्नाथ रथ यात्रा में युवाओं ने स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हुए जो भी मार्ग में कचरा निकलता उसको समेटते गए।

रथयात्रा का समापन प्लेटिनम प्लाजा माता मंदिर पर रात आठ बजे हुआ। इस मौके पर भक्तों को खिचड़ी और हलवा प्रसाद वितरित किया गया। राज्यमंत्री कृष्णा गौर, विधायक रामेश्वर शर्मा सहित शहर के कई गणमान्य लोगों ने रथ खींचा।

# सिटी बस में घुसकर ड्राइवर-कंडक्टर से मारपीट करने वाले दोनों बदमाश गिरफ्तार

## पुलिस ने निकाला जुलूस

**सिटी चीफ भोपाल।**

बुधवार शाम भदभदा स्थित सूरज नगर में भोपाल सिटी लिंक लिमिटेड (बीसीएएल) की लो-फ्लोर को बीच रास्ते में रोककर दो बदमाशों ने उसमें घुसने के बाद ड्राइवर और कंडक्टर से बेरहमी से मारपीट कर दी थी। वारदात के बाद दोनों वहां से भाग निकले थे। सीसीटीवी से मिले सुराग के आधार पर शनिवार को पुलिस ने दोनों बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने पहले तो दोनों की जमकर पिटाई की। इसके बाद दोनों बदमाशों का उसी इलाके में जुलूस भी निकाला, जहां इन्होंने वारदात की थी। इस दौरान दोनों बदमाश ठीक से चल भी नहीं पा रहे थे।

रातीबड़ थाना पुलिस के मुताबिक बुधवार शाम करीब पांच बजे दोपहिया पर सवार दो युवकों ने सूरज नगर में बस रुकवाकर ड्राइवर कृष्णपाल सिंह के साथ मारपीट करना शुरू कर दी थी। उसे बचाने की कोशिश करने पर उन्होंने कंडक्टर मुनि महेश को भी घायल कर दिया था। मारपीट करने के बाद आरोपित वहां से फरार हो गए थे। दरअसल, वारदात वाले

दिन आरक्षित सीट पर बैठे एक युवक को कंडक्टर ने सीट से उठा दिया ?था। इसके बाद दो युवकों ने दोपहिया वाहन से लो-फ्लोर बस का पीछा किया था। सूरज नगर तिराहे पर फिल्मी अंदाज में बस के आगे अपनी गाड़ी लगाकर बस रुकवाकर यह वारदात की थी। इस घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया था। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने सर्चिंग शुरू की और विभिन्न इलाकों में लगे सीसीटीवी के फुटेज निकालकर आरोपितों की पहचान कर ली। उसके बाद शाहजहांनाबाद निवासी 22 वर्षीय जितेंद्र तमोली और नेहरू कालोनी निवासी 22 वर्षीय सत्यम राठौर को गिरफ्तार कर लिया।

# थम सकता है बाघों का शिकार, 7 राज्यों को मिलकर करना होगा काम

## विशेषज्ञों ने सरकार को दी राय

**सिटी चीफ भोपाल।**

भोपाल। देश के सात राज्य मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और राजस्थान अगर संयुक्त रूप से प्रयास करें, तो देश में बाघ संरक्षण के प्रयास और बेहतर हो सकते हैं। शिकार की घटनाएं थम सकती हैं।

इन राज्यों में बाघों का कॉरिडोर

दरअसल, इन राज्यों में बाघों का कॉरिडोर है। 5 राज्यों के सबसे ज्यादा संरक्षित क्षेत्र हैं। ये इतने नजदीक हैं कि बाघ एक से दूसरे राज्य में घूमते हैं। करीब 30 हजार वर्ग किमी के इस क्षेत्र में संरक्षण के सशक्त प्रयास करने की जरूरत है। इस क्षेत्र में मध्य प्रदेश के बांधवगढ़, संजय दुबरी, छत्तीसगढ़ का गुरु घासीदास अभयारण्य, झारखंड का पलामु टाइगर रिजर्व, बिहार का रोहताश अभयारण्य आता है। जिनके बीच में बेहतर कॉरिडोर है, जो बाघ आबादी बढ़ाने के लिए बेहतर जगह बन सकती है।

**बाघ संरक्षण पर चर्चा**

बाघ संरक्षण पर चर्चा करते हुए वन्य प्राणी विशेषज्ञों ने कहा कि, यदि इन राज्यों की एक संयुक्त फोर्स बनाई जाए तो शिकार की घटनाएं भी रुक सकती है। बता दें की मध्य प्रदेश में पिछले पांच साल में 168 से अधिक बाघों की मौत हो चुकी है। वहीं देशभर में 607 मौतें हुई है।

इस वर्ष छह माह में ही देश भर में 75 बाघों की मौत हुई है। इनमें अधिकांश प्रकरण बाघ के शिकार के है। मध्य प्रदेश में बाघ के शिकार में अंतरराष्ट्रीय गिरोह के सक्रिय होने की बात भी सामने आई है। वहीं पांच साल में मप्र में 2,28,812 वन अपराध के प्रकरण दर्ज किए गए हैं।

राज्य सरकारें चाहें तो बाघों के शिकार

पर अंकुश लगाने के लिए सीमावर्ती राज्यों के साथ मिलकर संयुक्त रणनीति तैयार की जा सकती हैं। सेवानिवृत्त कत्र्ा जसबीर सिंह चौहान कहते हैं कि जब वह मध्य प्रदेश के मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक थे तो उन्होंने सीमावर्ती राज्यों की संयुक्त टीम बनाकर शिकार रोकने की पहल भी की थी।

वह सीमावर्ती राज्यों जैसे छत्तीसगढ़ तथा महाराष्ट्र में अपने समकक्ष अधिकारियों के साथ बैठक कर रणनीति तय करते थे। सीमावर्ती राज्य के अधिकारियों के साथ वन और वन्यप्राणी अपराधों के विषय में सूचनाओं का आदान प्रदान हो। संवेदनशील क्षेत्रों में संयुक्त गश्त करें।

वर्तमान में यह व्यवस्था कुछ क्षेत्रों तक सीमित है, लेकिन इसे और विस्तृत रूप देने की आवश्यकता है। जसबीर सिंह चौहान यह मानते हैं कि राज्य सरकार इस ओर पहल कर पड़ोसी राज्यों के साथ संयुक्त प्लान बनाकर कार्य करें तो बाघों के शिकार की घटनाओं में काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकता है। इनके अलावा हाल ही में सेवानिवृत्त हुए वन्यप्राणी अभिरक्षक अतुल श्रीवास्तव का भी कहना है कि राज्यों के संयुक्त प्रयास से बाघों का संरक्षण और बेहतर तरीके से किया जा सकता है।

## साम्पदकीय

### विपक्ष के लिए संजीवनी तो भाजपा के लिए आत्ममंथन का समय

सात राज्यों की 13 विधानसभा सीटों के उप चुनाव के नतीजे आ गए हैं। 10 सीटें इंडी एलायंस के खाते में गई हैं, जबकि भाजपा को केवल दो और एक निर्दलीय को मिली है। सबसे अधिक घाटा भाजपा को पश्चिम बंगाल में हुआ है। पश्चिम बंगाल के नतीजे यह दर्शा रहे हैं कि जो बढ़त भाजपा को पिछले विधानसभा चुनाव में मिली थी, वो अब खत्म हो गई है।

*उप चुनाव में कांग्रेस ने जोरदार वापसी की है। विशेषकर उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में। कांग्रेस ने न केवल अपनी जमीन को बचाया, बल्कि कुछ बढ़ोतरी भी हासिल की। वैसे तो इन नतीजों से किसी भी राज्य की सरकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगास लेकिन लोकसभा के बाद इन उप चुनावों पर देश की नजर जरूर थी। निश्चित ही भाजपा के लिए आत्ममंथन का समय है।पहले चर्चा पश्चिम बंगाल की। यहां चार सीटों पर उप चुनाव हुआ। चार में से तीन सीटों पर पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा जीती थी, जबकि एक सीट तृणमूल कांग्रेस के पास थी। लोकसभा चुनाव की भांति तृणमूल कांग्रेस ने अपने प्रदर्शन को बरकरार रखा है। तीन सीटें रानाघाट दक्षिण, रायगंज और बागदा भाजपा से छीन ली हैं, जबकि मानिकतला को बरकरार रखने में तृणमूल कांग्रेस कामयाब रही है। लोकसभा चुनाव के बाद हिंसा को लेकर विपक्ष ने तृणमूल कांग्रेस को घेरा था और ममता बनर्जी पर तीखे आक्रमण हुए थे, लेकिन नतीजे बताते हैं कि जनता पर हिंसा को लेकर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा है। ममता बनर्जी का जलवा बरकरार है। हिमाचल प्रदेश की हमीरपुर सीट भाजपा ने जीती है, जिस पर पहले निर्दलीय उम्मीदवार का कब्जा था। हिमाचल की बाकी दोनों सीटें देहरा और नलगढ़ कांग्रेस के खाते में गई हैं। यहां भाजपा दूसरे स्थान पर रही है, जबकि यह दोनों सीट पहले निर्दलीय के पास थीं। अभी लोकसभा चुनाव में भाजपा ने हिमाचल प्रदेश की सभी चारों सीटों पर जीत का परचम लहराया था। ऐसे में कांग्रेस ने दो सीट जीतकर वापसी की है। हालांकि, लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस का ध्यान विधानसभा उप चुनाव पर ही था, क्योंकि कांग्रेस सरकार संकट में आ गई थी। इन नतीजों से कांग्रेस को राहत मिली है। उत्तराखंड में भी दो सीटों पर उप चुनाव था। हालांकि, यह दोनों बद्रीनाथ और मंगलौर सीट सत्तारूढ़ भाजपा के पास नहीं थी। कांग्रेस ने बद्रीनाथ सीट पुन: जीत ली है। वैसे, सोशल मीडिया पर इस सीट को लेकर सबसे अधिक चर्चा है। मंगलौर की सीट को कांग्रेस ने बहुजन समाज पार्टी से छीना है। कांग्रेस ने उत्तराखंड में एक सीट की बढ़त बना ली है। बद्रीनाथ सीट को भावनात्मक रूप से देखा जा रहा था। यहां भाजपा ने पूरी ताकत लगाई थी। उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश, दोनों ऐसे राज्य हैं, जहां अग्निवीर योजना का एक बड़ा मुद्दा है। बिहार में भाजपा के सहयोगी जनता दल (यू) को झटका लगा है। रूपौली सीट पर जनता दल (यू) के प्रत्याशी की हार हुई है, जबकि यहां से पप्पू यादव समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार जीत गया है। पप्पू यादव ने पिछले दिनों कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी से भी मुलाकात की थी। भले यहां आरजेडी का प्रत्याशी चुनाव लड़ा, लेकिन पप्पू यादव के निर्दलीय उम्मीदवार को इंडी एलायंस का ही एक हिस्सा मानना चाहिए। तिहाड़ जेल में बंद अरविंद केजरीवाल के लिए जालंधर पश्चिम की सीट एक प्रतिष्ठा का विषय बन गई थी। आम आदमी पार्टी ने इस सीट पर पूरा जोर लगाया हुआ था। हालांकि, यह सीट पहले भी आम आदमी पार्टी के पास ही थी। यहां भाजपा ने दूसरे नंबर पर रहकर यह बताया है कि पंजाब में उसके कदम आगे बढ़ रहे हैं। मध्य प्रदेश से भाजपा के लिए थोड़ी अच्छी खबर आई, क्योंकि यहां की अमरवाड़ा सीट, जो पहले कांग्रेस के पास थी, उसे पार्टी ने जीत लिया है, यानी राज्य में उसकी सीटों में एक सीट का इजाफा हो गया है। इसी प्रकार तमिलनाडु की विक्रवड़ी सीट को डीएमके ने बरकरार रखा है। कांग्रेस और इंडी एलायंस के लिए यह उप चुनाव नतीजे संजीवनी का काम करेंगे। विपक्ष को नई धार मिली है। खासकर अक्टूबर में होने जा रहे हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा चुनावों को लेकर विपक्ष निश्चित रूप से उत्साहित होगा। विपक्ष के लिए यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि एकजुट होकर वो भाजपा को हरा सकता है। यही रणनीति आगामी चुनावों में भी देखने को मिलेगी। भाजपा के लिए निश्चित रूप से आत्ममंथन का समय है। भले यह नतीजे उसकी सरकारों पर बहुत अधिक प्रभाव न डालें, लेकिन कार्यकर्ताओं का मनोबल तो गिरता ही है। जनता के बीच ऐसी धारणा बनती है कि भाजपा और नरेंद्र मोदी से लोगों का मोहभंग हो रहा है।*

# समुद्र के भीतर वे सौ दिन... पनडुब्बी से अलग अनुभव, सेहत पर भी असर

जब हम समुद्र में दस से तीस मीटर की गहराई पर होते हैं, तब हल्का उत्साह और एक सकारात्मकता महसूस होती है। लेकिन तीस मीटर या उससे नीचे जाने पर हल्का नशा भी महसूस हो सकता है, जिसे 'नार्कोसिस' नाम दिया गया है। ऐसा क्यों होता है, इसका जवाब तो फिलहाल वैज्ञानिकों के पास भी नहीं है।

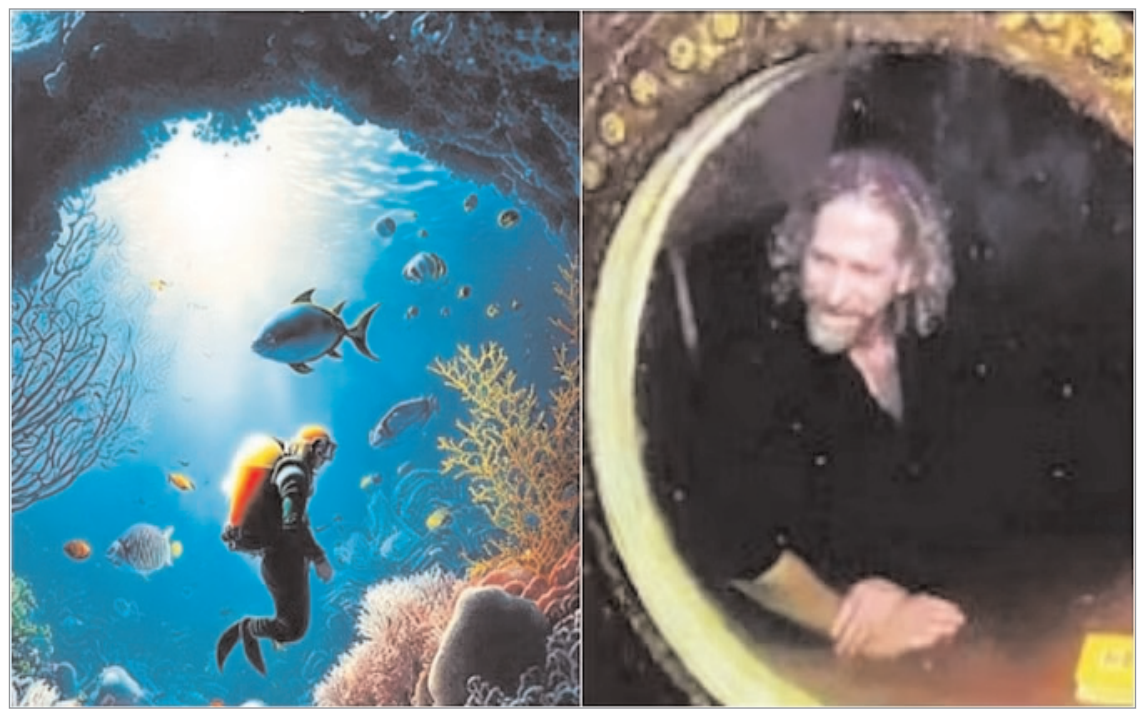

बुरे सपने कभी न कभी सबको आते हैं। लेकिन आपको मालूम है कि दुनिया भर में लोगों द्वारा देखे गए बुरे सपनों की सूची में सबसे ज्यादा बार देखा गया सपना कौन-सा है? वह सपना है खुद को कांच के ऐसे बॉक्स में बंद देखना, जिसके बाहर पानी ही पानी हो। जो दितूरी जैसा कोई विरला ही होगा, जिसने इस बुरे सपने को हकीकत में बदल कर पाया कि यह उतना बुरा भी नहीं था। दितूरी अमेरिकी नौसेना के सेवानिवृत्त गोताखोर हैं और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर हैं। उन्हें डॉ. डीप सी भी कहा जाता है। वह पहले भी कुछ दिनों के लिए कांच के एक खास केबिन में समुद्र के नीचे रहे हैं। लेकिन इस बार 55 वर्ग मीटर के कांच के घर में फ्लोरिडा के पास के समुद्र में सौ दिन रहकर उन्होंने वाकई रिकॉर्ड कायम किया है। दितूरी बताते हैं कि समुद्र के भीतर वे सौ दिन वाकई जादुई थे।

जब पनडुब्बी पानी के भीतर होती है, तो वह पूरी तरह से बंद होती है और उसमें समुद्र की सतह वाले दबाव को ही बनाए रखा जाता है। समुद्र की गहराइयों में भी हवा के दबाव में खास फर्क मालूम नहीं पड़ता। लेकिन दितूरी सौ दिन तक समुद्र के भीतर जिस कांच के घर में रहे, उसमें पानी और रहने की जगह के बीच कोई एयरलॉक नहीं था, जैसा पनडुब्बी में होता है। दितूरी का कांच का घर ऐसे ही था, मानो पानी से भरे बड़े बर्तन में गिलास उलटा करके रख दिया गया हो। ऐसा करने पर?चारों ओर पानी होने के बावजूद गिलास में हवा बनी रहती है। ऐसे ही दितूरी के कांच के घर में हवा बनी रही, हालांकि इस घर में समुद्र के रास्ते नीचे से प्रवेश करने की व्यवस्था थी। इसे यों समझें कि कांच के घर के अंदर की हवा का दाब समुद्र के दबाव से कम था, फिर भी, गहराई में कांच के घर के अंदर हवा का दबाव जमीन पर रहने वाले दबाव से करीब दोगुना ज्यादा तो था ही। पेशेवर गोताखोर जानते हैं कि समुद्र के अंदर की दुनिया?आसान नहीं होती।?गहराइयों में समुद्र के पानी का हाइपरबेरिक दबाव मनुष्य के लिए खतरा भी बन सकता है।?विकास की कई अवस्थाओं को पार कर इन्सान का शरीर जमीन पर रहने का अभ्यस्त हुआ है। जमीन पर सांस लेने के लिए हम दो गैसों यानी ऑक्सीजन और कार्बन डाई ऑक्साइड का इस्तेमाल करते हैं, जो हमारे फेफड़ों व रक्त के बीच आसानी से आर-पार होती रहती हैं। लेकिन समुद्र के नीचे जब दबाव बढ़ता है, तब हवा में मौजूद नाइट्रोजन हमारे फेफड़ों की नाजुक दीवारों को पार कर रक्त में घुलने लगती है। इसका गंभीर असर हो सकता है। जब हम समुद्र में दस से तीस मीटर की गहराई पर होते हैं, तब हल्का उत्साह और सकारात्मकता महसूस होती है। पर?तीस मीटर या उससे नीचे जाने पर हल्का नशा भी महसूस हो सकता है, जिसे 'नार्कोसिस' नाम दिया गया है। ऐसा क्यों होता है, इसका जवाब तो फिलहाल वैज्ञानिकों के पास भी नहीं है। पर मेरे विचार से यह हमारे मस्तिष्क में न्यूरॉन्स और न्यूरोट्रांसमीटर के संकेत देने के तरीके में बदलाव के कारण हो सकता है। हालांकि दितूरी को इससे कोई खतरा नहीं था, क्योंकि वह केवल दस मीटर की गहराई पर थे। गहरे समुद्र में कांच के घर में अकेले दितूरी। चारों ओर नीले पानी का साम्राज्य। न कोई मोबाइल फोन, न टेलीविजन। चूंकि पानी पूरे कांच के घर को काट रहा था, इसलिए उन्हें ऐसा महसूस होता था कि हर चीज उनकी ओर ही बढ़ रही है। समुद्र के भीतर का अजीबोगरीब जीवन। वनस्पतियां, छोटी और बड़ी मछलियां। सब उनके चारों ओर टकरा रही थीं। कई मछलियों को तो उन्होंने अपनी तरफ से नाम भी दिए हुए थे। दितूरी के कांच के घर में उन्हें सब कुछ दिख रहा था। फिर भी जमीन की तुलना में उन्हें सूरज की आधी रोशनी ही मिल रही थी। जाहिर है कि इससे उनकी आंतरिक घड़ी प्रभावित हो रही थी। विटामिन 'डी' भी कम मिल पा रहा था। ऐसे में अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को दुरुस्त बनाए रखने के लिए वह अन्य स्रोतों का सहारा ले रहे थे और उन्हें स्वास्थ्य का भी खास?ध्यान रखना पड़ रहा था, क्योंकि शरीर में कई ऐसे विषाणु होते हैं, जो प्रतिरक्षा प्रणाली के कमजोर होने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। हड्डियों को नुकसान से बचाने के लिए दितूरी हफ्ते में पांच दिन एक घंटे व्यायाम जरूर करते थे। उन्होंने सिर्फ एक्सरसाइज बैंड का इस्तेमाल किया। इससे वह कांच के चैंबर में विकसित हुई अपनी मांसपेशियों को संतुलित रखने में सक्षम थे। दितूरी खुद मानते हैं कि यह सब कहना जितना आसान लग रहा है, उतना था नहीं। गहरे समुद्र में उनकी सतर्कता का आलम यह था कि वह सांस भी सोच-समझ कर लेते थे। वह अपने चारों ओर के हर बदलाव को नोट कर रहे थे। आखिर यह उनकी जिंदगी थी, और वहां गहराइयों में उसका ख्याल उन्हें खुद ही रखना था। समुद्र से बाहर आने के बाद दितूरी की नींद पहले से छियासठ फीसदी बेहतर हुई है। कोलेस्ट्रॉल का स्तर 72 पॉइंट घट गया है। अनावश्यक वसा?हटने से वह छरहरे हो गए हैं। प्रारंभिक निष्कर्षों में उनकी नींद और कोलेस्ट्रॉल के स्तर में भारी सुधार हुआ। डीएनए परीक्षणों सहित व्यापक चिकित्सा जांचों से पता चला कि दितूरी बाहर आने के बाद जैविक रूप से युवा हो गए हैं। दितूरी के टेलोमेरेस-गुणसूत्रों के सिरों पर डीएनए कैप, जो आमतौर पर उम्र के साथ सिकुड़ते हैं और समय के साथ छोटे?होते जाते हैं-तीन महीने यानी करीब 100 दिन पहले की तुलना में 20 प्रतिशत लंबे हो गए थे। यानी विज्ञान की भाषा में कहें, तो दितूरी की वास्तविक उम्र दस साल कम हो गई है। समुद्र की गहराइयों में हवा का दबाव ज्यादा होता है। ऐसे में, दितूरी अपने इस प्रयोग से यह जानना चाहते थे कि ऐसे दबाव का उनके स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ता है। इसे डाइविंग चिकित्सा या अंडर सी चिकित्सा भी कहते हैं, जिसमें व्यक्ति को ऑक्सीजन से भरे उच्च वायुदाब वाले चैंबर में रखा जाता है।

## अगस्त्य ने वातापि को कैसे मारा, पितरों की मुक्ति को पत्नी की शर्त पूरी करने के लिए

*महर्षि अगस्त्य को उनके पितरों ने विवाह करके संतान उत्पन्न करने की आज्ञा दी। अत- अगस्त्य ने विदर्भराज की पुत्री लोपामुद्रा से विवाह कर लिया। कुछ दिन बाद महर्षि अगस्त्य ने पत्नी से संतान उत्पन्न करने की बात छेड़ी, तो लोपामुद्रा बोली, 'ऋषिवर, मैं संतानोत्पत्ति के लिए तैयार हूं, किंतु पहले मुझे धन, आभूषण और वस्त्र लाकर दीजिए। मैं दीन-जीर्ण अवस्था में समागम नहीं करना चाहती!' अगस्त्य ने खूब समझाया, परंतु लोपामुद्रा ने हठ नहीं छोड़ा। पितरों की मुक्ति के लिए लोपामुद्रा की शर्त पूरी करना अनिवार्य था। आखिरकार अगस्त्य ने किसी राजा से धन मांगने का निश्चय किया। शर्त यह थी कि जिस राजा के आय-व्यय का हिसाब बराबर होगा, उससे धन नहीं लिया जाएगा, क्योंकि ऐसा करने से उस राय की प्रजा के हितों की हानि होगी। यह सोचकर अगस्त्य, अनेक राजाओं के पास गए, किंतु सबके आय-व्यय का हिसाब बराबर मिला। तब त्रसदस्यु नामक एक राजा ने अगस्त्य को इसका उपाय बताया-'इल्वल और वातापि नाम के दो असुर भाई हैं। वह अवश्य आपकी सहायता करेंगे। परंतु किसी ब्राह्मण ने दोनों भाइयों को आशीर्वाद देने से मना कर दिया था। तभी से दोनों असुर ब्राह्मणों का वध करने में लगे हैं। पहले इल्वल आसुरी शक्ति से अपने भाई वातापि को बकरा बनाता है, फिर उसे ही काटकर उसका मांस भोजन में मिलाकर ब्राह्मण को खिला देता है। इल्वल के पास एक और शक्ति है कि वह जिस मृत प्राणी को उसके नाम से पुकारता है, वह जीवित होकर पुन- प्रकट हो जाता है। इस तरह, वातापि का मांस ब्राह्मण को परोसने के बाद इल्वल जैसे ही वातापि का नाम पुकारता है, तो वातापि पुन: जीवित हो जाता है और ब्राह्मण का पेट फाड़कर बाहर आ जाता है और ब्राह्मण की तत्काल मृत्यु हो जाती है! इस तरह दोनों भाई अनेक ब्राह्मणों की हत्या कर चुके हैं।अगस्त्य मुस्कराए और इल्वल-वातापि से धन मांगने चल पड़े। अगस्त्य को देखते ही दोनों भाई प्रसन्न हो गए। अगस्त्य ने इल्वल के सामने जैसे ही धन की मांग रखी, वह तत्काल धन देने को तैयार हो गया। इल्वल बोला, 'मुनिवर! आपको जितना धन चाहिए, मैं दूंगा। परंतु पहले आप मेरे यहां भोजन करके मुझे कृतार्थ करें। उसने अपनी पुरानी चाल चली। भाई वातापि का मांस भोजन में मिलाकर अगस्त्य को परोस दिया। अगस्त्य ने चुपचाप भोजन खाया। फिर वह इल्वल से बोले, 'इल्वल, मैंने भोजन कर लिया है। अब मुझे धन दे दो, तो मैं चलूं।' इल्वल जोर से हंसा। उसने आवाज लगाई, 'वातापि! बाहर आओ!' लेकिन वातापि नहीं आया। इल्वल ने कई बार वातापि का नाम पुकारा, लेकिन कुछ नहीं हुआ। अब हंसने की बारी अगस्त्य की थी! उन्होंने इल्वल से कहा, 'मुझे पता है कि तुमने वातापि को मारकर उसका मांस मेरे भोजन में मिलाया था। परंतु तुम्हारा भाई अब वापस नहीं आएगा, क्योंकि मैं उसे खाकर पचा चुका हूं!' अगस्त्य बोले, 'इल्वल! यदि मैं समुद्र में छिपे कालकेयों को मारने के लिए एक घूंट में समुद्र का पानी पीकर उसे पचा सकता हूं, तो तुम्हारा भाई क्या चीज है! उसे भूल जाओ। मुझे जल्दी से धन दो, मुझे विलंब हो रहा है।' इल्वल ने चुपचाप अगस्त्य को प्रचुर धन दे दिया, जिसे लेकर अगस्त्य अपनी पत्नी लोपामुद्रा के पास आ गए। धन पाकर लोपामुद्रा बहुत प्रसन्न हुई। इसके बाद लोपामुद्रा ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम दृढ़स्यु रखा गया। दृढ़स्यु के जन्म का समाचार सुनकर अगस्त्य के पितरों को शांति मिल गई। उन्होंने अगस्त्य को आशीर्वाद दिया और फिर वे सब परलोक सिधार गए।*

# अश्विन के हाथ में बल्ला.. गेंदबाजों को ब्लू कॉलर के रूप में इस्तेमाल करते हैं बल्लेबाज

जब मैंने क्रिकेट पर आर अश्विन के संस्मरणों की किताब का कवर देखा तो इस बात से चकित रह गया कि उसमें लेखक बल्ले के हैंडल को उम्मीद से अपने हाथों से पकड़े सफेद कपड़ों में बैठा है। ऐसा लग रहा है, जैसे वह विकेट गिरने का इंतजार कर रहा हो और ड्रेसिंग रूम से मैदान पर जाने के बारे में सोच रहा हो।हालांकि मैं यह जानता हूं कि अश्विन बल्लेबाजी कर सकते हैं, लेकिन उनके संस्मरणों की किताब के प्रकाशित होने से काफी पहले लोग उन्हें स्कूली क्रिकेट में विकेट लेने के बजाय रन बनाने की क्षमता के लिए जानते थे। मैंने अश्विन को ज्यादा खेलते नहीं देखा है। मैं आमतौर पर टेस्ट क्रिकेट देखता हूं। फिर भी मैंने टीवी पर उन्हें हाथ में बल्ला लेकर खेलते हुए देखा है। मैं अपनी स्मृति में उन्हें एक तेज गेंदबाज के सामने खड़ा और गेंद को शानदार तरीके से पॉइंट के पार पहुंचाते देखता रहा हूं या मैं उन्हें स्पिनर की तरफ तेजी से ट्रैक पर कूदते और गेंदबाज के सिर के ऊपर से गेंद को साइट स्क्रीन पर उछालते देखता रहा हूं। टेस्ट क्रिकेट में अश्विन द्वारा खेली गई दो सबसे महत्वपूर्ण पारियों में इन दोनों में से कोई भी शॉट ज्यादा मायने नहीं रखता। ये पारियां वर्ष 2021 के जनवरी और फरवरी, लगातार दो महीनों में अलग-अलग मैदानों पर अलग-अलग टीमों के खिलाफ खेली गई थीं। इनमें से पहली पारी में अश्विन ने हनुमा विहारी के साथ मिलकर सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर ऑस्ट्रेलियाई आक्रमण को विफल करते हुए 40 ओवर तक एक साथ खेलकर अपनी टीम को एक ऐतिहासिक ड्रॉ तक पहुंचाया। उस पारी में अश्विन या तो फ्रंट फुट पर मजबूती से प्रहार करते दिखे या बैक फुट पर चतुराई से बचाव करते। दो ओवरों के बीच में भारत के इन दो

खिलाड़ियों के बीच लंबी बातचीत होती थी। दूसरी पारी अश्विन के घरेलू मैदान पर इंग्लैंड के खिलाफ खेली गई थी। भारत ने पहली पारी में अच्छी बढ़त हासिल की थी, फिर भी दूसरी पारी में 106 रन पर 6 विकेट खो दिए थे। तब अश्विन आए और कोहली, कुलदीप, इशांत और सिराज के साथ साझेदारी करके भारत को 286 के कुल स्कोर तक पहुंचाया, जहां से आसानी से जीत मिल सकती थी। अश्विन ने खुद शतक बनाया, जिसमें ऑफ साइड पर कोई बैकफुट फोर्स नहीं थी, केवल कुछ डिफेंसिव प्रोड्स और एकाध लॉफ्टेड शॉट थे, लेकिन स्क्वायर के पीछे और सामने बहुत सारे शानदार स्वीप थे। सिर्फ मैं ही नहीं, जो लोग उनकी किताब खरीदेंगे, वे भी जानते हैं कि अश्विन बल्लेबाजी कर सकते हैं। फिर भी भारतीय क्रिकेट के इतिहास में अश्विन को उनकी 'बॉलिंग स्किल' के लिए अधिक याद किया जाएगा। लेकिन सवाल यह है कि 500 से अधिक टेस्ट विकेट लेने वाले अनिल कुंबले के अलावा किसी अन्य की तुलना में भारत के लिए सबसे अधिक टेस्ट मैच जीतने वाले व्यक्ति ने अपने संस्मरणों की किताब क्यों प्रकाशित की, उसे प्रचारित किया और उसके कवर पर खुद को बल्ला पकड़े हुए क्यों दिखाया? मैं अश्विन से कभी नहीं मिला, लेकिन मैंने उनके बारे में जो कुछ पढ़ा और सुना है, उससे लगता है कि वह दृढ़ और विचारवान व्यक्ति हैं। इसलिए यह काफी हद तक निश्चित है कि यह तस्वीर प्रकाशक या लेखक के लेखन सहयोगी सिद्धार्थ मोंगिया द्वारा नहीं, बल्कि अश्विन द्वारा ही चुनी गई होगी। फिर वह गेंद के बजाय बल्ला पकड़े कवर क्यों चाहते होंगे? मैं इस सवाल का कोई निश्चित जवाब नहीं दे सकता (शायद समय के साथ अश्विन दे सकें)। मैं अनुमान लगा सकता हूं। क्या उस तस्वीर में कोई एक या उससे अधिक छिपा हुआ संदेश है? क्या अश्विन हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे कि विश्व और भारतीय क्रिकेट की दुनिया में गेंदबाजों की तुलना में बल्लेबाजों को अधिक पैसा, प्रसिद्धि, प्रशंसक, टीवी विज्ञापन, 'प्लेयर ऑफ द मैच' एवं 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' पुरस्कार, सेल्फी और ऑटोग्राफ के लिए अधिक अनुरोध मिलते हैं? क्रिकेट के खेल में बल्लेबाज लाड़-प्यार से पाले जाने वाले अभिजात वर्ग की तरह हैं और गेंदबाज अतिश्रम से पीड़ित अधीनस्थ। क्या अश्विन तस्वीर के चयन और खेल में अपनी बेहतर स्थिति के माध्यम से अपनी बात को अधिक सूक्ष्मता और संवेदनशीलता से कह रहे हैं? मैंने इस बारे में लिखा है कि क्रिकेट के खेल में मैच जिताने वाले बल्लेबाज, मैच जिताने वाले गेंदबाजों की तुलना में कहीं ज्यादा लाभ प्राप्त करते हैं। निराशाजनक रूप से यह भेदभाव सिर्फ पैसे के मामले में नहीं, उससे कहीं आगे तक जाता है। बल्लेबाज स्टीव वॉ और रिकी पोंटिंग ने क्रमश: 57 और 72 टेस्ट मैचों में ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी की, जबकि शेन वॉर्न को कभी भी यह जिम्मेदारी नहीं दी गई। वॉर्न एक शानदार क्रिकेट रणनीतिकार थे और मुझे कोई संदेह नहीं है कि वे वॉ या पोंटिंग से भी अधिक सफल टेस्ट कप्तान होते। यह पूर्वाग्रह भारतीय कप्तान के चयन में भी मौजूद है। विराट कोहली ने 68 और रोहित शर्मा ने 16 टेस्ट मैचों में भारत का नेतृत्व किया है, जबकि अश्विन ने कभी भारत की कप्तानी नहीं की है। इसका आंशिक कारण यह भी हो सकता है कि पहले वाले दोनों बल्लेबाज हैं, जबकि अश्विन मुख्य रूप से एक गेंदबाज हैं। हम जानते हैं कि अश्विन देश के सबसे बुद्धिमान क्रिकेटरों में से एक हैं। यह निश्चित रूप से तय है कि अगर चेन्नई के इस खिलाड़ी को अपने देश की कप्तानी करने का मौका मिलता तो वह इसमें अच्छा प्रदर्शन करते, क्योंकि इंग्लैंड के रे इलिंगवर्थ और ऑस्ट्रेलिया के रिची बेनॉड के उदाहरण बताते हैं कि स्पिन गेंदबाज बेहतरीन टेस्ट कप्तान बन सकते हैं। मुझे नहीं लगता है कि अश्विन द्वारा कवर पर फोटो का चयन उनकी कप्तानी की महत्वाकांक्षाओं के बारे में किसी तरह का संकेत है। ऐसा लगता है कि वह हमें मैदान पर और मैदान के बाहर बल्लेबाजों और गेंदबाजों के साथ व्यवहार करने के तरीकों में सामान्य पूर्वाग्रहों के बारे में जागरूक कर रहे हैं। एक तीसरा कारण यह हो सकता है कि अश्विन को वास्तव में बल्लेबाजी करना पसंद है। वैसे, शेन वॉर्न और अनिल कुंबले को भी बल्लेबाजी करना पसंद था। शेन वार्न को इस बात का हमेशा अफसोस रहा। उन्होंने 12 टेस्ट में अर्धशतक बनाए, लेकिन उनका उच्चतम स्कोर 99 रन रहा। हालांकि लोगों को यह बात जरूर याद रखनी चाहिए कि उन्होंने कम से कम एक बार ऐसा मुकाम हासिल किया, जिसे उनके महान ऑस्ट्रेलियाई समकालीन हासिल करने में असफल रहे। ध्यान देने योग्य बात यह है कि वॉर्न द्वारा लिखी गई पांच पुस्तकों में से केवल दो में उनका चेहरा है, जबकि तीन में उन्हें गेंदबाजी करते या विकेट लेते दिखाया गया है। हम कुंबले द्वारा लिखे गए संस्मरण का इंतजार कर रहे हैं। जब भी वह आएगा तो उसके कवर पर 619 टेस्ट विकेट लेने वाले खिलाड़ी की तस्वीर बल्ला थामे हुए होने की संभावना नहीं है। अब जबकि मैंने इसे पढ़ लिया है, मैं पुष्टि कर सकता हूं कि कम से कम एक अंश मेरे विश्लेषण की पुष्टि करता है कि पुस्तक का कवर ऐसा क्यों है। लेखक की बातों से वह अंश शुरू होता है, 卐आखिरकार गेंदबाज से बल्लेबाज बने और फिर कोच बने डब्ल्यूवी रमन के साथ एक और बातचीत होती है। मैं उन्हें वही बताता हूं, जो मैं ईमानदारी से महसूस करता हूं। गेंदबाजों को बल्लेबाजों द्वारा ब्लू कॉलर के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। ऐसा क्यों है कि अगर कोई गेंदबाज खराब गेंद फेंकता है तो उसे नेट्स में बल्लेबाज से माफी मांगती पड़ती है और अगर बल्लेबाज खराब शॉट खेलता है तो वह माफी नहीं मांगता है?

अधिक से अधिक पौधे लगाये जाने से हमारा पर्यावरण संतुलित रहेगा और मानव जीवन के लिये यह बहुत आवश्यक हैः शाखा प्रबन्धक श्री ज्ञानेन्द्र सिंह भादौरिया

# मिशन प्लांट ए लाईफ के अंतर्गत LIC ने सम्प्रेक्षण गृह (विभाग) में किया गया पौधा रोपण

**रणधीर चंदेल । सिटी चीफ** गुना, भारतीय जीवन बीमा निगम के केन्द्रीय कार्यालय के मिशन प्लांट ए लाईफ के अंतर्गत भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा गुना के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सम्प्रेक्षण गृह (विभाग) के सहयोग से पौधा रोपण किया गया । इस अवसर पर भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा गुना के शाखा प्रबन्धक श्री ज्ञानेन्द्र सिंह भादौरिया ने भारतीय जीवन बीमा निगम के द्वारा पौधे रोपण के लिये चलाये जा रहे प्लांट ए लाईफ मिशन के बारे में बताया एवं उन्होनें बताया कि अधिक से अधिक पौधे लगाये जाने से हमारा पर्यावरण संतुलित रहेगा और मानव जीवन के लिये यह बहुत आवश्यक है। उन्होंने उपस्थित सभी को अधिक से अधिक पौधे लगाये जाने हेतु भी प्रोत्साहित किया। और बताया कि जिस प्रकार भारतीय जीवन बीमा निगम अपने पॉलिसी धारकों के साथ जीवन के साथ भी और जीवन के बाद भी हमेशा सहयोग देती है। उसी प्रकार हम अधिक से अधिक पौधे रोपित करें जिससे कि यह पौधे हमें जीवन के साथ एवं जीवन बाद भी पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखें । इस अवसर पर बाल कल्याण समिति गुना की अध्यक्षा डॉ0 निरू शर्मा, जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री आर0बी0 गोयल, सहायक संचालक मनोज भारद्वाज, संप्रेक्षण गृह के अधीक्षक दिनश कुमार चंदेल, विधि सह परिवीक्षा अधिकारी आशीष रघुवंशी ने भारतीय जीवन बीमा निगम के इस पौधा रोपण कार्य के लिये धन्यवाद दिया एवं उन्होंने भी पौधे लगाये जाने को मानव प्राण के लिए बहुत जरूरी बताया। इस अवसर पर भारतीय जीवन बीमा निगम के प्रशासनिक अधिकारी प्रदीप फालके, सहायक शाखा प्रबन्धक बी0एल0 मीना, विकास अधिकारी नरेन्द्र सिंह जाट, प्रदीप अग्रवाल शामिल रहे । सम्पूर्ण कार्यक्रम में सम्प्रेक्षण गृह विभाग के, मानसिंह चौहान हरिकृष्ण शर्मा, बाबूसिंह राजपूत यदुवीर जादौर और लोकेन्द्र सिंह शामिल रहे।

## गुना पुलिस को मिली बड़ी सफलता

# 54.550 किलोग्राम वजन की चांदी बरामद

**रणधीर चंदेल। सिटी चीफ** गुना, गुना धरनावदा थाना पुलिस ने जमीन खोदकर चांदी के 50 किली से अधिक वजनी चोरी के देवरातों को खोजने में सफलता जात की है। एक माह पूर्व राजस्थान के मनोहर थाना से एक ज्वेलरी पारदी महिला बदमाशों द्वारा चुराए गए थे। कपडे की पोटली में बांधकर सभी जेवरात को चीलाखेड़ी में एक खेत में जमीन के अंदर गाड़कर छुपा दिया थे। लेकिन पुलिस ने जमीन के निचे दबे जेवरातों को भी खोज निकाला। इस मामले का पूरा खुल्ला पुलिस अधीक्षक एसपी संजीव कुमार द्वारा प्रेसवार्ता में खुलासा किया गया। थाना प्रभारी राजेन्द्रसिंह चौहान टीम के साथ सूचना की मिलने पर ग्राम चौलाखेडी पहुंचे और मुखबर द्वारा बताई जगह पर खुदाई कराई गई। इस खुदाई में पोटली मिली जिसे खोलकर देखने पर उसमें कपड़े की अलग-अलग पोटलियों में चांदी के जेबर रखे हुए मिले। जिनका बजन करने पर पोटली सहित 54.550 किलोग्राम वजन पाया गया एवं चांदी की रकामों को अलग से तौलने पर चांदी का कुल बजन 54.300 किया। की एक पोटलियों में अनिल अग्रवाल नाम का एक आधार कार्ड मिला बरामद 54.300 किलोग्राम चांदी की कीमत करीब 53 चांदी की चोरी करके लाख रपये आंकी गई है। पुलिस द्वारा 106 बीएमएसएस के तहत कार्रवाई की गई.

# सीएम राइज स्कूल खूंटा टोला के निर्माण कार्य की ग्रामीणों ने कमिश्नर, कलेक्टर से की थी शिकायत

## कॉलम कंक्रीटिंग में मिली कमी तो तोड़कर पुनः से बनाया कॉलम

**यशपाल सिंह जाट। सिटी चीफ** अनूपपुर, विकासखंड जैतहरी के ग्राम खूंटा टोला में निर्माणाधीन सीएम राइज स्कूल भवन की गुणवत्ता के संबंध में स्थानीय ग्रामीणों ने पिछले दिनों शहडोल संभाग के कमिश्नर श्री बीएस जामोद व कलेक्टर श्री आशीष वशिष्ठ के ग्राम खूंटा टोला प्रवास के दौरान निर्माण कार्य की गुणवत्ता को लेकर शिकायत की थी। शिकायत का संज्ञान लेते हुए कमिश्नर एवं कलेक्टर ने लोक निर्माण विभाग (भवन) के अधिकारियों को निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का परीक्षण करने के निर्देश दिए थे जिसके पालन में लोक निर्माण विभाग (भवन) के कार्यपालन यंत्री,अनुविभागीय अधिकारी तथा उप यंत्री के दल द्वारा खूंटाटोला स्थित निर्माणाधीन सीएम राइस भवन के निर्माण कार्यों का जायजा लिया गया। निरीक्षण के दौरान कॉलम कंक्रीटिंग में कमी पाई गई। जिस पर संविदाकार को तकनीकी अधिकारियों द्वारा निर्देशित किए जाने पर संविदाकार द्वारा कॉलम को तोड़कर पुनः अनुबंध अनुसार बनाने की कार्यवाही की गई। तकनीकी अधिकारियों ने संविदाकार को निर्माण कार्य के दौरान गुणवत्ता का ध्यान रखने तथा निर्धारित मानक का पालन सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए।

## चार बच्चों के साथ कुएं में कूदी मां, चारों की मौत, महिला को बचाया

**मंदसौर।** पति से विवाद के बाद एक महिला अपने चार बच्चों के साथ कुएं में कूद गई। इस घटना में चार बच्चों की मौत हो गई। घटना सुबह करीब 6 बजे हुई। पुलिस से मिली प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यह घटना गरोठ इलाके के पीपलखेड़ा गांव में हुई। लोगों से पूछताछ में यह पता चला है कि महिला का अपने पति से किसी बात को लेकर विवाद हुआ। इसके बाद महिला ने कुएं में छलांग लगा दी। महिला ने अपनी तीन बालिकाओं और एक बालक के साथ कुएं में छलांग लगाई। इस घटना से हड़कंप मच गया। बताया जाता है कि शनिवार रात पति ने जब महिला से मारपीट की तो महिला अपने बच्चों को लेकर आंगनवाड़ी केंद्र चली गई थी। रात भर आंगनवाड़ी में रहने के बाद महिला सुबह बच्चों के साथ खेत पर बने कुएं में कूद गई। जैसे ही महिला के बच्चों के साथ कुएं में कूदने की जानकारी मिली तो बड़ी संख्या में लोग मौके पर जमा हो गए। इसके बाद कुछ लोगों ने महिला को तो कुएं से सकुशल निकाल लिया, लेकिन वे बच्चों को नहीं निकाल पाए। पता चला है कि तीन लड़कियों और एक लड़के की पानी में डूबने से मौत हो गई। बच्चों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए गरोठ के अस्पताल भेजा गया है।

# महिला की घर में हुई संदिग्ध मृत्यु का थाना कोतवाली पुलिस ने किया खुलासा

## आत्महत्या दुष्प्रेरण में दो आरोपी हुए गिरफ्तार

**यशपाल सिंह जाट । सिटी चीफ** अनूपपुर, अनूपपुर पुलिस अधीक्षकश्री जितेन्द्र सिहं पवार (भा.पु.से.), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री इसरार मन्सूरी एवं एसडीओपी अनूपपुर श्री सुमित केरकेट्टा के मार्गदर्शन में कोतवाली पुलिस द्वारा अनूपपुर शहर के वार्ड न 13 में सम्परिया तालाब के पास रमाकान्त पाण्डेय के मकान में किराये से रह रही नवयुवती विन्देश्वरी उर्फ नेहा राठौर की घर में हुई संदिग्ध मृत्यु का चन्द घण्टो में खुलासा करते हुए आत्महत्या के लिए दुश्प्रेरित करने के अपराध में दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की

उल्लेखनीय है कि दिनांक 12.07.2024 को सुबह नरनाहर सिहं निवासी वार्ड न. 13 अनूपपुर के द्वारा थाना कोतवाली में सूचना दी गयी कि उनके पड़ोस ड़ोस में में रमाकान्त पाण्डेय के मकान में किराये से रहने वाली महिला विन्देश्वरी उर्फ नेहा राठौर संदिग्ध हालत में अपने घर के फर्श पर मृत पड़ी हुई है और दूसरे कमरे में सीलिंग फैन से दुपट्टे का फन्दा बंधा हुआ है। पुलिस अधीक्षक अनूपपुर श्री जितेन्द्र सिहं पवार के निर्देशन में कोतवाली पुलिस द्वारा तत्काल मृतिका के परिजनो ग्राम कोलमी निवासी पिता दिनेश राठौर एवं अन्य को बुलाया जाकर वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी शहडोल श्री आर.पी. अहिरवार, फिन्गरप्रिन्ट विशेषज्ञ, डाक स्काड के साथ घटनास्थल एवं शव का निरीक्षण किया जाकर शव का पोस्टमार्टम कराया गया। पुलिस द्वारा घटनास्थल से महत्वपूर्ण साक्ष्य एकत्र कर आस पास लगे सीसीटीवी कैमरो की रिकार्डिंग एवं मोबाईल नम्बरो की काल डिटेल आदि वैज्ञानिक साक्ष्यों को एकत्र कर कड़ियों को जोड़ते हुए मृतिका विन्देश्वरी उर्फ नेहा राठौर की संदिग्ध मृत्यु का खुलासा किया गया।

पुलिस द्वारा जांच पर पाया गया कि मृतिका विन्देश्वरी उर्फ नेहा राठौर पिता दिनेश राठौर उम्र करीब 27 साल निवासी ग्राम कोलमी पुलिस चौकी फुनगा थाना भालूमाड़ा जिला अनूपपुर का करीब नौ वर्ष पूर्व वर्ष 2015 में सौरभ शिवहरे निवासी फुनगा जिला अनूपपुर से हुई थी जो वर्ष 2020,21 विन्देश्वरी अपने पतिसे अलग हो गयी और अनूपपुर में रहकर नितिन कपड़े वाले की दुकान में काम करने लगी। जहां उसका परिचय फिर दोस्ती एवं प्रेम संबंध दुकान में काम करने वाले सतन प्रजापति पिता धनीराम प्रजापति उम्र करीब 28 साल निवासी ग्राम दमना थाना कोतवाली जिला अनूपपुर से हो गया और जिसके कुछ महीनो बाद विन्देश्वरी राठौर की दोस्ती संकल्प सिहं परिहार पिता गोविन्द सिहं परिहार उम्र करीब 19 साल निवासी ग्राम बरबसपुर थाना कोतवाली अनूपपुर से हो गयी जिसके बाद दिनांक 15.03.2024 को मृतिका विन्देश्वरी राठौर द्वारा संकल्प सिहं परिहार के द्वारा बलात्कार किये जाने की रिपोर्ट दर्ज कराने पर थाना कोतवाली अनूपपुर में अपराध क्रमांक 139/2024 धारा 376,376(2) एन, 294,506 भारतीय दण्ड विधान पंजीबद्ध किया जाकर अभियोग पत्र दिनांक 08.05.2024 को माननीय न्यायालय पेश किया गया जो प्रकरण माननीय न्यायालय में विचाराधीन है। उक्त प्रकरण में मृतिका विन्देश्वरी राठौर की न्यायालय में गवाही होनी है, जो संकल्प सिहं परिहार द्वारा उक्त प्रकरण में खुद के पक्ष में बयान बदलने हेतु लगातार मृतिका विन्देश्वरी राठौर को डरा धमकाकर दबाव बनाया जाकर प्रताड़ित करने एवं सतन प्रजापति द्वारा विन्देश्वरी राठौर की संकल्प सिहं परिहार से दोस्ती एवं नजदीकी बढने पर लगातार विन्देश्वरी राठौर को प्रताड़ित किये जाने से परेशान होकर मृतिका द्वारा दिनांक 11 एवं 12 जुलाई 2024 की दरम्यानी रात रमाकान्त पाण्डेय के किराये के मकान में सीलिंग फैन से दुपट्टे द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या कर लेना पाया गया। मृतिका विन्देश्वरी राठौर द्वारा अपने घर पर सीलिंग फैन से दुपट्टे द्वारा फांसी लगाने की घटना पर उसी समय मौके पर पहुंचे सतन प्रजापति द्वारा मृतिका की मृत्यु हो जाना पाये जाने पर बिना पुलिस को सूचना दिये मौके से भाग जाना पाया गया। मामले में संकल्प सिहं परिहार एवं सतन प्रजापति को अपराध क्रमांक 346/24 धारा 108,3(5),238 भारतीय न्याय संहिता में गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र सिहं पवांर द्वारा घटना का त्वरित खुलासा कर दोनो आरोपियो को गिरफ्तार करने में सक्रिय टी.आई. कोतवाली अरविन्द जैन एवं उनकी टीम उपनिरी. संजय खलखो सउनि संतोष वर्मा, सउनि सुखीनंद यादव, सउनि एस.पी. सिहं, सउनि महिपाल नामदेव, प्र.आर. राजकुमार साहू प्र. आर. संदीप प्रकाश साहू, प्र.आर. रीतेश सिहं, प्र. आर. अनिल तिवारी, आरक्षक शुभम वर्मा, आर. संजय सिहं, महिला आरक्षक कविता, म. आर. अंकिता को पुरूष्कृत किये जाने की घोषणा की गयी है।

# विद्यालय भवन एवं छात्रावास का कुटीर एवं ग्रामोद्योग मंत्री ने किया लोकार्पण

## मंत्री ने समझाया शिक्षा का महत्वता

**यशपाल सिंह जाट। सिटी चीफ अनूपपुर,** विद्यालय भवन एवं छात्रावास का कुटीर एवं ग्रामोद्योग मंत्री ने किया लोकार्पण अनूपपुर जिला अंतर्गत बिजुरी/रामनगरबनगवां अन्तर्गत संचालित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं छात्रावास का लोकार्पण करने के लिए पहुंचे मध्यप्रदेश सरकार के कुटीर एवं ग्रामोद्योग मंत्री दिलीप जायसवाल ने दीप प्रज्वलित करते हुए लोकार्पण किया। इस दौरान डॉ. पूनम वैश्य सहित विद्यालय प्रबंधक एवं भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी, कार्यकर्ता व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

**शिक्षा कि महत्वता को समझाया मंत्री ने-** विद्यालय एवं छात्रावास के लोकार्पण के दौरान पहुंचे मंत्री दिलीप जायसवाल ने उपस्थित लोगों को जीवन में शिक्षा का महत्व बतलाते हुए। लोगों को शिक्षा के प्रति प्रेरित किया। साथ ही मंत्री ने यह भी कहा कि शिक्षित व्यक्ति जीवन में प्रत्येक स्थानों पर ना केवल कामयाबी पाता है, अपितु सही मार्गदर्शन एवं ज्ञान के कारण वह समाज में प्रतिष्ठा भी पाता है। शिक्षा को धारण कर जीवन में आत्मसार करने वाला व्यक्ती कामयाबी कि उंचाई को छूकर, सदैव सम्मान का पात्र बनता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में शिक्षा का महत्व समझते हुए, शिक्षा को धारण करना आवश्यक है.

## कटनी में भाजपा कार्यालय में विजयराघवगढ़ के विधायक व पूर्व मंत्री संजय पाठक ने पत्रकारों से की चर्चा

# गिनाई नई सरकार की उपलब्धियां, चर्चा के दौरान मुड़वारा विधायक जिला अध्यक्ष और भाजपा के वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे

**सुनील यादव । सिटी चीफ** कटनी, कटनी के भाजपा कार्यालय में आज विजयराघवगढ़ के विधायक व पूर्व मंत्री संजय पाठक ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए प्रदेश के बजट, सड़कों के जाल, हर घर जल व कृषि क्षेत्र में उन्नति, आयुष्मान मध्यप्रदेश, महिलाओं का सशक्तिकरण, प्रदेश की तरक्की, शिक्षा, अनुसूचित जाति-जनजाति कल्याण, नई सरकार की उल्लेखनीय अन्य प्रमुख उपलब्धियां पर विस्तार से बात रखी। इस दौरान मुड़वारा के विधायक संदीप जायसवाल व जिला अध्यक्ष दीपक सोनी टंडन और भाजपा के वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे। वही पत्रकारों द्वारा जब विजयराघवगढ़ के विधायक संजय पाठक से सवाल पूछा की उनके द्वारा विधानसभा की कार्यवाही के दौरान विजयराघवगढ़ में जल जीवन मिशन के माध्यम से हर घर नल हर घर जल योजना में अधिकारियों एवं ठेकदारों द्वारा कार्यों में की जा रही अनिमित्ता का मुद्दा को उठाया था और बड़े तेवर के साथ यह बात रखी थी इस मामले में संजय पाठक ने बताया की विधानसभा में वाह अपने विधानसभा क्षेत्र विजयराघवगढ़ में अधूरे पड़े नल जल योजना के कार्यों के चलाते लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की मंत्री संपतिया उईके से विधानसभा में प्रश्न के माध्यम से जानना चाहा था कि विजयराघवगढ़ विधानसभा के ग्राम पंचायत खलवारा, परसवारा सहित अन्य ग्रामों में अधूरी योजनाओं को सरपंचों सचिव को हेंडोवर किए जाने का मुद्दा उठाया था,उन्होंने सदन में बताया कि ये योजना हर घर तक स्वच्छ पेयजल पहुंचाने के लिए चलाई जा रही है पर अधिकारियों द्वारा गलत डीपीआर बनाने एवं ठेकेदारों द्वारा गांव के एक बहुत बड़े हिस्से में लाइन नहीं बिछाई गई है,जिससे सभी लोगों तक योजना का लाभ नहीं पहुंचा है ग्राम पंचायत खलवारा में शासकीय की जगह प्रायवेट बोर से टंकी को जोड़ दिया गया है जल क्षमता का शासकीय बोर किया ही नहीं जिससे टंकी को भरा जा सके। फिर भी अधिकारियों एवं ठेकदारों द्वारा पंचायत को योजना पूर्ण बताकर हेंडोवर कर दी गई। प्रश्न के उत्तर में विभागीय मंत्री की अनुपस्थिति में संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने इस तरह की जानकारी होने से इंकार करते हुए हुए बताया कि जिन योजनाओं में समस्त घरों में पानी नहीं मिल रहा उन्हें पुनरीक्षित कर दिया गया है।इस पर उन्होंने ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 75 वर्षों के इतिहास में हर घर तक जल पहुंचाने की सबसे महत्वपूर्ण बड़ी योजना चलाई है नरेंद्र मोदी का सपना है हर घर तक स्वच्छ जल पहुंचे पर अधिकारियों ने गलत जानकारी भेजी है वे चाहते है की भोपाल से वरिष्ठ अधिकारी या कमेटी जाकर जांच करें।

# कोतवाली थाना क्षेत्र में दो पक्षों के बीच हिंसक झड़प

## एक युवक गंभीर रूप से घायल, दोनों पक्षों पर मामला दर्ज

**सुनील यादव। सिटी चीफ** कटनी, कटनी के कोतवाली थाना क्षेत्र सब्जी मंडी में दो पक्षों के विवाद हो गया और जमकर चाकूबाजी हुई और इस की घटना में एक युवक को सिर पर गंभीर चोटें आई हैं। जिसका इलाज अस्पताल में चल रहा है। कोतवाली पुलिस ने दोनों पक्षों के विरूद्ध काउंटर मामला दर्ज किया है। इस संबंध में घायल सिविल लाइन क्षेत्र निवासी 20 वर्षीय सुजल खटीक ने बताया की सब्जी मंडी में उसका विवाद बिट्टू कछवाहा, कल्लू बकरा व करन कछवाहा से हो गया।मामूली कहासुनी से शुरू हुआ विवाद बढ़ा तो बिट्टू कछवाहा, कल्लू बकरा व करन कछवाहा ने मिलकर सुजल पर चाकू से हमला कर दिया। हमले में सुजल के सिर में गंभीर चोंटे आई हैं। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कोतवाली पुलिस ने सुजल की शिकायत पर बिट्टू कछवाहा, कल्लू बकरा व करन कछवाहा के विरूद्ध मामला दर्ज कर लिया है। इसी मामले में पुलिस ने ईश्वरीपुरा वार्ड निवासी बिट्टू कछवाहा की शिकायत पर सुजल खटीक व नीरज खटीक के विरूद्ध भी मामला दर्ज कर पूरे मामले की जांच में जुट गई है।

# मुख्यमंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष भगवान जगन्नाथ रथ-यात्रा में हुए शामिल

## आरती उतारकर एवं पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली के लिए प्रार्थना की

**अरविंद सिंह पवैया । सिटी चीफ** ग्वालियर, ग्वालियर में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भगवान श्री जगन्नाथ की रथ यात्रा में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार की देर रात ग्वालियर के सराफा बाजार में पहुँचकर भगवान जगन्नाथ जी की आरती उतारी एवं पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली के लिये प्रार्थना की। साथ ही स्वर्ण झाड़ू से भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा के मार्ग की सफाई की। इसके पश्चात विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर के साथ भगवान जगन्नाथ के रथ को खींचकर आगे बढ़ाया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ग्वालियर में आज श्रृद्धाभक्ति का सैलाब उमड़ा है। भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा ने पूरे ग्वालियर को जोड़ने का काम किया है। सौभाग्य की बात है कि मुझे भी इस पुनीत अवसर का साक्षी होने का मौका मिला है। साथ ही कहा कि पूरी दुनिया में इस्कॉन द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति एवं भगवान राम एवं श्रीकृष्ण के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय कृष्णा भावनामृत (इस्कॉन) के तत्वावधान में शनिवार को ग्वालियर शहर में भगवान श्री जगन्नाथ की रथ यात्रा निकली। रथ यात्रा में विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण भी शामिल हुए। साथ ही इस्कॉन के इंटरनेशनल चेयरमेन श्री गुरू प्रसाद स्वामी, मध्यप्रदेश के जोनल सेकेट्री महामना प्रभु, रीजनल सेकेट्री व प्राणेश्वर प्रभु सहित अन्य विशिष्टजन भी इस यात्रा में सहभागी बने। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा ने पूरे ग्वालियर शहर को जोड़ने का काम किया है। साथ ही समूचे शहर में भक्तिभाव का संचार किया है। उन्होंने कहा ग्वालियर की रथ यात्रा देखकर उड़ीसा की रथ यात्रा का आभास हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्वास जताया कि भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा ग्वालियर सहित सम्पूर्ण प्रदेश के लोगों के जीवन में खुशियों का संचार करेगी। शनिवार को सनातन धर्म मार्ग स्थित जीवायएमसी मैदान से भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा शुरू हुई। यह यात्रा दाल बाजार, नया बाजार, लोहिया बाजार, ऊँट पुल, दौलतगंज, महाराज बाड़ा, सराफा, नई सड़क व हनुमान चौराहा होते हुए गोयल वाटिका पहुँची और यहीं पर यात्रा का समापन हुआ।

# सपा भूमि अधिग्रहण के मुद्दे को लोकसभा में उठाएंगीः सांसद इकरा हसन

**सहारनपुर**, कैराना की सपा सांसद इकरा हसन ने आज कहा कि वह शामली-अंबाला निर्माणाधीन नेशनल हाइवे के लिए किसानों की अधिग्रहित की गई भूमि के मुआवजे के सवाल को लोकसभा में उठाएंगी। सांसद इकरा हसन मुआवजे की मांग को लेकर भारतीय किसान यूनियन के धरने पर पहुंची थी। यह धरना भाकियू के नेतृत्व में किसानों ने तीतरो थाना क्षेत्र में दिया हुआ था। धरने पर गांव कलसी, बालू और रामराय खेड़ी के किसान बैठे थे। कैराना सांसद इकरा हसन के साथ धरने पर सहारनपुर के पूर्व सांसद फजर्लुरहमान कुरैशी, सपा एमएलसी शाहनवाज खान, सपा विधायक उमर अली और आशू मलिक, सपा के महासचिव चौधरी रूद्रसेन, प्रदेश सचिव मांगेराम कश्यप आदि भी शामिल थे। सपा विधायकों ने भी किसानों की समस्याओं को विधानसभा और विधान परिषद में उठाने का भरोसा दिया है।

# थाना नागझिरी पुलिस ने किया एक त्रिवेणी क्षिप्रा नदी के पास मिली अज्ञात महिला की लाश व घटना का खुलासा

## मृतिका के पति ने ही पैसों के विवाद के चलते की थी हत्या, पति व अन्य दो साथी गिरफ्तार

**उज्जैन**, दिनांक 13.07.2024 को सूचनाकर्ता नानूराम अजमेरी ने सुबह करीब 8.00 बजे 100 नम्बर पर फोन लगाकर बताया कि एक त्रिवेणी क्षिप्रा नदी के छोटे ब्रिज के बाँय तरफ नदी में टाट के बोरे में बंद एक लाश दिखाई पड़ रही है। उक्त सूचना पर पुलिस तत्काल घटना स्थल पर पहुँची व स्थानीय बुलवाया जाकर टाट के बोरे में बंद डेड बॉडी को पानी से बाहर निकालकर जमीन पर रखा तो पाया कि वह एक अज्ञात महिला की डेड बॉडी दोनो हाथ व दोनो पैर रस्सी से बंधे हुए थे। इसी दौरान घटना स्थल पर शासकीय फोटोग्राफर, एफएसएल व फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट द्वारा घटना स्थल का निरीक्षण किया गया। उसके उपरांत मर्ग क्रमांक 0/24 धारा 194 बीएनएस कायम कर शव को पोस्टमार्टम हेतु जिला अस्पताल रवाना किया गया बाद थाना नागझिरी पर असल मर्ग क्रमांक 24/24 धारा 194 बीएनएस कायम किया गया। इसी के समांतर पुलिस की दूसरी टीम जिले के समस्त थानों में गुम महिला संबंधी गुमशुदगी से महिला की शिनाख्तगी की गई। इसी दौरान तेजाराव परमार हमराह अपने दमाद गोकुल टिपानिया के थाना पंवासा में अपनी बेटी की गुमशुदगी की सूचना देने हेतु उपस्थित हुआ। तेजाराव परमार द्वारा बताये गये उसकी बेटी के हुलिये से घटना स्थल पर मिली अज्ञात महिला की लाश से हुलिये का मिलान होने से थाना प्रभारी पंवासा तत्काल उसे जिला अस्पताल के मर्चुरीरूम मे ले गये तो तेजाराव परमार द्वारा अज्ञात महिला के शव की पहचान अपनी बेटी रचना पति गोकुल टिपानिया के रूप में की गई।

दौराने जाँच मृतिका रचना के पिता ने

तेजाराव परमार द्वारा बताया गया कि उसकी बेटी रचना अपने पति के साथ पंवासा क्षेत्र में राम मंदिर के पीछे रहती थी जो 11.07.2024 की मध्य रात्री से उसका कुछ पता नही चल रहा था। घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक उज्जैन श्री प्रदीप शर्मा व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर पश्चिम श्री गुरुप्रसाद पाराशर द्वारा पुलिस की 04 टीमें नगर पुलिस अधीक्षक नानाखेडा श्रीमती श्वेता गुप्ता, नगर पुलिस अधीक्षक जीवाजीगंज श्री सुमित अग्रवाल, थाना प्रभारी नागझिरी श्री कमल निगवाल व थाना प्रभारी पंवासा श्री रविन्द्र कटारे के नेतृत्व में गठित की गई।

टीम द्वारा छानबीन के दौरान सीसीटीव्ही कैमरों के फुटेज तलाशे गये एवं अन्य तकनीकी संसाधनों की मदद ली गई। दौरानै जांच मृतिका के पति गोकुल टिपानिया के मोबाईल फोन में पुलिस को कुछ संदेहास्पद विडियो मिले जिनको उनसे छिपाकर रखा हुआ था। इसी दौरान दूसरी टीम को सीसीटीव्ही फुटेज में एक ई-रिक्शा घटना स्थल के आस पास आता जाता दिखाई दिया तत्पश्चात मृतिका के पति गोकुल टिपानिया पर संदेह होने पर उसे अभिरक्षा में कर पूछताछ की गई तो उसके द्वारा अपना जुर्म स्वीकार करते हुए बताया कि मेरा मेरी पत्नी से पैसों को लेकर विवाद हो गया था तो मैंने गुस्सें में आकर जब मेरी पत्नी सो रही थी तब मैंने उसके हाथ पैर बाँध दिये और रस्सी से उसका गला दबाकर उसकी हत्या करदी। उसके बाद मैंने अपने दोस्त को फोन लगाकर अपने घर बुलवाया जो ई-रिक्शा लेकर अपने दोस्त एक के साथ मेरे घर आया उसके बाद हम तीनों ने मेरी पत्नी की लाश को बोरे में भरकर ई-रिक्शा अन्य में ले जाकर त्रिवेणी घाट के छोटे पुल से दिनांक 12.07.2024 की सुबह, करीब 4.00 बजे नदी में फेंक दिया।

उक्त घटना पर से थाना नागझिरी पर अप.क्र. 153/24 धारा 18311), 238 का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। उसेपी दो अन्य आरोपी व ई-रिक्शा की तलाश जाटी है।

सराहनीय भूमिका -थाना प्रभारी नागझिरी निरी कमल निगवाल, थाना प्रभारी पंवासा उप निरीक्षक रविन्द्र कटारे, उप निरीक्षक करण खोवाल, उप निरीक्षक गमर सिंह मण्डलोई उप निरीक्षक पूजा सोलंकी, सउनि धर्मेन्द्र सिंह तोमर, सउनि रोहित पारस, प्र.आर. ईश्वर, आर. रोहित मिश्रा, आर. 1527 हरिशरण सिंह, आर. 1687 साकेत शर्मा, महिला आर. 1057 रंजना की मुख्य भूमिका रही।

# मण्डलायुक्त सहारनपुर ने की कांवड यात्रा तैयारी के संबंध में सहारनपुर मुजफ्फरनगर एवं शामली के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मण्डलीय समीक्षा बैठक

## बैठक में डीएम एवं एसएसपी सहित मण्डलीय अधिकारी रहे उपस्थित

**गौरव सिंघल । सिटी चीफ** सहारनपुर, मण्डलायुक्त सहारनपुर डॉ0 हृषिकेश भास्कर यशोद की अध्यक्षता में सर्किट हाउस सभागार में कांवड यात्रा को सकुशल एवं शांतिपूर्ण संपन्न कराये जाने हेतु मण्डलीय समीक्षा बैठक की गयी। बैठक में तीनों जनपदों के जिलाधिकारियों एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों द्वारा पीपीटी के माध्यम से कांवड यात्रा के संबंध में आने वाली चुनौतियो एवं उनसे निपटने के लिए की गई तैयारियों से मण्डलायुक्त को अवगत कराया गया। उन्होंने कहा कि कांवड यात्रा को सकुशल एवं शांतिपूर्ण संपन्न कराये जाने हेतु प्रशासन पूर्ण रूप से तैयार है। मण्डलायुक्त हृषिकेश भास्कर यशोद ने कहा कि कांवड यात्रा के सफल संचालन के लिए सभी अधिकारी समन्वय बनाकर अपने उत्तरदायित्वों का सक्रिय ढंग से निर्वहन करें। उन्होने निर्देश दिए कि विभागीय स्तर पर भी सभी मण्डलीय अधिकारी बैठक कर समीक्षा करते रहें तथा विभागीय मण्डलीय अधिकारी निरंतर भ्रमणशील रहें। इसके लिए भ्रमण प्लान बनाकर अवगत भी कराएं। जनपद स्तरीय अधिकारियों का भी एक भ्रमण प्लान अपने पास रखें ताकि बेहतर ढंग से यात्रा को समपन्न कराया जा सके। कांवड यात्रा को प्लास्टिक फ्री रखा जाए। इस कार्य के लिए जन सहयोग भी लिया जाए। मार्ग पर संचालित ढाबों, दुकानों एवं रेस्टोरेन्ट पर सुस्पष्ट शब्दों में प्रोपराइटर का नाम एवं मोबाइल नम्बर अंकित होने के साथ ही रेट लिस्ट चस्पा हो। डॉ0 हृषिकेश भास्कर यशोद ने नगर निकायों एवं पंचायत विभाग के अधिकारियों को कांवड मार्ग पर बेहतर साफ-सफाई, शौचालय एवं पेयजल

व्यवस्था, एनएचएआई एवं लोक निर्माण विभाग को गड्ढामुक्त सडकें, संकेतक, विद्युत विभाग को निर्बाध एवं सुरक्षित विद्युत आपूर्ति, ट्रांसफार्मरों की बैरीकेटिंग, विद्युत खम्भों की प्लास्टिक टेपिंग, वन विभाग को आवश्यकतानुसार पेडों की कटाई एवं छंटाई, स्वास्थ्य विभाग को आवश्यक एम्बुलेंस एवं मेडिकल शिविर तथा दवाओं की उपलब्धता, खाद्य सुरक्षा विभाग को खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता एवं रेट लिस्ट, सिंचाई विभाग को नहरों पर संकेतक एवं बेरीकेटिंग व्यवस्था करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनपद स्तर पर बनाए गये कन्ट्रोल रूम में सभी विभागों के अधिकारियों की ड्यूटियां लगवाई जाएं। कन्ट्रोल रूम के नम्बर का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए।

पुलिस उप महानिरीक्षक अजय कुमार साहनी ने कांवड यात्रा के संबंध में निर्देश देते हुए कहा कि लगने वाले शिविरों को समय से अनुमति दे दी जाए। कांवड मार्ग पर कूडा दान को ढककर रखा जाए। बेरियरों पर रिफलेक्टर लगाए जाएं। विद्युत आपूर्ति की वैकल्पिक व्यवस्था के लिए छोटे वाहन पर जनरेटर की व्यवस्था रखी जाए। उन्होंने कहा कि निर्धारित मानकों का पालन कराने हेतु डीजे संचालकों से समन्वय कर लिया जाए। उन्होने स्थानीय गोताखोरों की सूची पुलिस के साथ साझा करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिलाधिकारी सहारनपुर मनीष बंसल, जिलाधिकारी मुजफ्फरनगर अरविन्द मल्लप्पा बंगारी, जिलाधिकारी शामली रविन्द्र सिंह, नगर आयुक्त संजय चौहान, अपर आयुक्त प्रशासन सुरेन्द्र राम, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सहारनपुर रोहित सिंह सजवान, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मुजफ्फरनगर अभिषेक सिंह, पुलिस अधीक्षक शामली अभिषेक, मुख्य विकास अधिकारी सुमित राजेश महाजन, एसपी यातायात सहारनपुर सिद्धार्थ वर्मा सहित संबंधित विभागों के मण्डलीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

# दिल्ली मंडल के डीआरएम ने रेलवे के निर्माण कार्यों का किया निरीक्षण

## निर्माण एजेंसी के अधिकारियों को सभी कार्य समय से और गुणवत्ता को ध्यान में रखकर पूरा करने के दिए निर्देश

**गौरव सिंघल । सिटी चीफ** सहारनपुर, दिल्ली मंडल के डीआरएम सुखविंदर सिंह ने अमृत भारत योजना के तहत टपरी रेलवे स्टेशन पर जारी निर्माण कार्यों का आज औचक निरीक्षण किया। उन्होंने सहारनपुर-दिल्ली वाया शामली रेल मार्ग के नानौता और रामपुर मनिहारान के पास अंडरपास का भी निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माण एजेंसी के अधिकारियों को सभी कार्य समय से और गुणवत्ता को ध्यान में रखकर पूरा करने के निर्देश दिए। ध्यान रहे नानौता और रामपुर मनिहारान के अंडरपास में बरसात में पानी

भर जाता है। लोगों ने इस समस्या के निराकरण की मांग डीआरएम के समक्ष रखी। लोगों को जलभराव की समस्या से निजात दिलाने का भरोसा दिया।

# मजदूरों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली अचानक पहिया निकलने से अनियंत्रित होकर रोडवेज बस से जा भिडी

## हादसे में महिलाओं समेत कई लोग हुए घायल

**गौरव सिंघल । सिटी चीफ** सहारनपुर, सहारनपुर जनपद की गागलहेड़ी सरकारी नर्सरी से पेड लेने जा रही मजदूरों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली का पहिया अचानक निकलने से वह अनियंत्रित होकर हरियाणा रोडवेज की बस से जा भिड़ी। हादसे में ट्रॉली में सवार महिलाओं समेत कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। इस दौरान वाहनों का कई किमी लंबा जाम लग गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मांडेबॉस गांव से एक ट्रैक्टर-ट्राली महिला मजदूरों को लेकर सरकारी नर्सरी से पेड लाने के लिए जा रही थी। जैसे ही महिला मजदूरों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली हिंडन पुल के समीप पहुंची तो ट्रैक्टर का अगला पहिया निकल गया पहिया निकलने पर ट्रैक्टर-ट्राली अनियंत्रित होकर

सामने से आ रही हरियाणा रोडवेज बस से जा भिड़ी। ट्रैक्टर-ट्रॉली और रोडवेज बस की भिड़त के बाद ट्राली में बैठी सुमन पत्नी सेठपाल, कबुली पत्नी भरतु, शोराज पुत्र चोहल, नरेंद्र पुत्र लोती, रचना पत्नी बबलू, सोमकली पत्नी प्रवीण गंभीर रूप से घायल हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को नजदीकी प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराया। घटना के बाद हिंडन पुल पर वाहनों की लंबी लाइन लग गई। जाम लगने से वाहनों की लाइन कैलाशपुर से लेकर देहरादून रोड पर पर दया शुगर मिल तथा भगवानपुर रोड पर मक्का बॉस तक जाम लग गया। जाम लगने से पुलिस कर्मियों को जाम खुलवाने में घंटों मशकक्त करनी पड़ी।

# कलेक्टर श्री सिंह ने जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण किया

**हरदा**

कलेक्टर श्री आदित्य सिह ने शनिवार को जिला चिकित्सालय हरदा का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिला चिकित्सालय के टायलेट में सफाई नही पाये जाने, डस्टबिन उपलब्ध न होने, व कूलरो में पानी नही भरने पर एजेन्सी के सुपर वाईजर श्री प्रदीप तिवारी को कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए 15 दिवस का वेतन काटने के निर्देश दिये। उन्होने अस्पताल प्रबंधक श्री जितेन्द्र वर्मा को कार्य में लापरवाही एवं जिला चिकित्सालय में गंदगी पाए जाने पर कारण बताओ नोटिस देते हुए 15 दिवस का वेतन काटने के निर्देश सिविल सर्जन हरदा डॉ. मनीष शर्मा को दिये।

कलेक्टर श्री सिंह ने निरीक्षण के दौरान जिला चिकित्सालय में आई सामग्री एवं अनुपयोगी सामान अस्त व्यस्त पडे होने पर स्टोर कीपर को नोटिस जारी करने के निर्देश सिविल सर्जन हरदा को दिये। उन्होने दीवारो पर लगे अनुपयोगी पोस्टरों को हटाने व उन्हे उचित स्थान पर लगवाने के निर्देश अस्पताल प्रबंधक को दिये। निरीक्षण के दौरान उन्होने एसएनसीयू वार्ड का रिकार्ड देखा। कलेक्टर श्री सिंह ने एसएनसीयू से डिस्जार्च बच्चों का आशा कार्यकताओ के द्वारा फालोअप करने के निर्देश दिये। उन्होने निरीक्षण के दौरान एनआरसी में ए.सी लगवाने, एनआरसी की छत की मरम्मत व वाटर प्रूफिंग कराने, कूड़ेदान की प्रतिदिन सफाई कराने, मरीजों के लिए वेटिंग एरिया का निर्माण, दीवारों पर प्रेरणादायक अच्छे स्लोगन लिखवाने, पुरानी अनुपयोगी बिल्डिंग एवं पुरानी पानी की टंकी को डिसमेंटल कर वहां पार्क एवं वाहन पार्किंग बनाने के निर्देश दिये भी दिये। कलेक्टर श्री सिंह ने जिला चिकित्सालय में प्रतिदिन निरीक्षण करने एवं उसका रिकार्ड संधारित करने के निर्देश भी सिविल सर्जन डॉ. शर्मा को दिये। उन्होने निर्माणधीन अस्पताल का निरीक्षण भी किया और निर्माण कार्य में पुट्टी एवं अन्य कार्य ठीक ढंग से न होने तथा कार्य करने वाली ऐजेन्सी उपस्थित न होने पर पीआईयू के अधिकारी को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। उन्होने निर्माण कार्य की गुणवत्ता का परीक्षण आरईएस, पी डबल्यू डी एवं एनएचएम के इंजीनियर की संयुक्त टीम से करने के निर्देश दिए।

# प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन कार्यक्रम 14 जुलाई को

**जिला स्तरीय कार्यक्रम शास. एम.जे.एस. कॉलेज भिण्ड में होगा आयोजित**

**भिंड**

*जिले के एम.जे.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिण्ड को दिनांक 14 जुलाई 2024 को प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उन्नयित कर मा. श्री अमित शाह जी, गृहमंत्री, भारत सरकार द्वारा वर्चुअल उद्घाटन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला (मुख्य अतिथि) के साथ सांसद श्रीमती संध्या राय एवं विधायक भिण्ड श्री नरेन्द्र सिंह कुशवाह विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल रहेंगे। यह कार्यक्रम दोपहर 01:30 बजे से 03:30 बजे तक आयोजित होगा। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों द्वारा महाविद्यालय में स्थापित किये गये भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ एवं हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रकोष्ठ को औपचारिक रूप से प्रारम्भ करते हुये चिन्हित विद्यावन का अवलोकन कर पौधारोपण किया जायेगा। इसके अलावा अतिथियों द्वारा महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं के लिये बस सेवा का उद्घाटन किया जायेगा।*

# रोगी कल्याण समिति की बैठक संपन्न

**हरदा**

कलेक्टर श्री आदित्य सिंह की अध्यक्षता में जिला चिकित्सालय हरदा में रोगी कल्याण समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में कलेक्टर श्री सिंह ने मरीजो की सुविधा के लिए अस्पताल के बाहर टीन शेड लगवाने के निर्देश दिए ताकि मरीजों को गर्मी और बरसात में असुविधा ना हो। बैठक में कलेक्टर श्री सिंह ने रोगी कल्याण समिति द्वारा किए गए खर्चों का सत्यापन ट्रेजरी ऑफिसर से कराने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि रोगी कल्याण समिति के खाते में जमा राशि का शासन के प्रावधानों और नियम अनुसार ही प्रयोग किया जाए ।

उन्होंने कहा कि समाजसेवी संगठनों, बैंकों और दानदाताओं से जिला चिकित्सालय हरदा में आने वाले मरीजों की सुविधा के लिए वाटर कूलर एवं अन्य संसाधन प्राप्त किए जाएं। कलेक्टर श्री सिंह ने रोगी कल्याण समिति की राशि से कराई जाने वाले सभी निर्माण कार्य और विकास कार्य विधिवत निविदा आमंत्रित कर करवाने के निर्देश दिए।

# ग्वालियर को मिली वेस्टर्न बायपास की सौगात

**केन्द्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग राज्य मंत्री श्री टम्टा ने दी सैद्धांतिक स्वीकृति**

**ग्वालियर**

**सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह की पहल पर मिली है मंजूरी**

**ग्वालियर शहर के लिये रिंग रोड़ की भूमिका निभायेगा वेस्टर्न बायपास**

ग्वालियर शहर के लिये बड़ी खुशखबरी है। शहर को वेस्टर्न बायपास की सौगात मिली है। ग्वालियर प्रवास पर आए केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री श्री अजय टम्टा ने लगभग 1004 करोड़ रूपए की लागत से प्रस्तावित 28.8 किलोमीटर लम्बी वेस्टर्न बायपास परियोजना की सैद्धांतिक स्वीकृति दी है। सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह की पहल पर उन्होंने यह स्वीकृति दी। श्री कुशवाह ने केन्द्रीय मंत्री श्री टम्टा से भेंट कर वेस्टर्न बायपास मंजूर करने के लिये विशेष आग्रह किया था। सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह ने बताया कि वेस्टर्न बायपास ग्वालियर के लिये रिंग रोड़ का कार्य करेगा और इससे साडा क्षेत्र के विकास में तेजी आयेगी। उन्होंने बताया कि रायरू बायपास से शुरू होकर साडा क्षेत्र से होते हुए पनिहार एबी रोड़ तक लगभग 28.8 किलोमीटर लम्बाई में वेस्टर्न बायपास का निर्माण किया जायेगा। वेस्टर्न बायपास के निर्माण से एबी रोड़ से गुजरने वाले वाहनों को 30 किलोमीटर की कम दूरी तय करनी पड़ेगी। साथ ही एक घंटे के समय की बचत भी होगी। श्री कुशवाह ने बताया कि वेस्टर्न बायपास की डीपीआर बनकर तैयार हो गई है। साथ ही इसकी वैधानिक स्वीकृतियां अंतिम चरण में हैं।

# जैविक उत्पाद को बाजार उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाये

**दमोह**

आकांक्षी जिला अंतर्गत एक दिवसीय समेकित कार्यशाला संपन्न

नीति आयोग आकांक्षी जिला अंतर्गत कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आईटीसी मिशन सुनहरा कल एवं एन सी एच एस ई द्वारा एक दिवसीय जिला स्तरीय समेकित कार्यशाला आयोजित की गई। इस दौरान उत्कृष्ट अवार्ड से किसानों को सम्मानित करते हुये आई टी सी मिशन सुनहरा कल के द्वारा किसानो की बनाई गई सफलता की कहानी का विमोचन किया गया। किसानों से कहा जैविक उत्पाद को बाजार उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाये द्य .प्रगतिशील किसानो द्वारा कृषि कार्य किया जा रहा है, दमोह जिले के अन्य किसानो तक इसका लाभ पहुंचाया जाना चाहिए।

# कोठियाटोला पुलिस-नक्सल मुठभेड़

**मारे गए नक्सली की वस्तुस्थिति**

**बालाघाट** 8 जुलाई को थाना हट्टा क्षेत्रान्तर्गत कोठियाटोला जंगल क्षेत्र में प्रतिबंधित भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) संगठन के कान्हा-भोरमदेव डिवीजन व जीआरबी डिवीजन के सक्रिय सशस्त्र नक्सलियों व पुलिस के मध्य हुई मुठभेड़ में केबी) डिवीजन के एरिया कमेटी सदस्य सोहन उर्फ उकास आयतु उम्र लगभग 30-35 निवासी ग्राम पूवर्ती थाना जगरगुंडा जिला सुकमा छत्तीसगढ़ मारा गया था। मृत नक्सली के एरिया कमेटी सदस्य सोहन उर्फ उकास उर्फ आयतु होने की पुष्टि आत्मसमर्पित नक्सलियों द्वारा जिला चिकित्सालय बालाघाट में उपस्थित होकर की गई थी। जिसका विधिवत शिनाख्तगी पंचनामा तैयार करवाया गया है। नक्सली के शव को प्राप्त करने जिला चिकित्सालय बालाघाट आये उसके परिजन जिसमें उसका छोटा भाई डोडी विजय पिता भीमा एवं चचेरा भाई आयतु राम मंडावी पिता पोदिया सभी निवासी ग्राम पूवर्ती थाना जगरगुंडा जिला सुकमा छत्तीसगढ़ द्वारा भी शव की पहचान अपने बड़े भाई सोहन उर्फ उकास उर्फ आयतु के रूप में की गई। परिजनों द्वारा मृतक नक्सली की पहचान का विधिवत शिनाख्तगी पंचनामा तैयार कर विडियोग्राफी कराई गई। जिला अस्पताल बालाघाट में मृतक नक्सली सोहन उर्फ उकास उर्फ आयतु का पोस्टमार्टम डॉक्टरों के पैनल द्वारा किया गया। पोस्टमार्टम के उपरांत मृतक नक्सली के शव को अंतिम संस्कार के लिए परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया है।

# प्रोजेक्ट में देरी के लिये जिम्मेदार ठेकेदारों व अधिकारियों की जवाबदेही तय हो - सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह

**ग्वालियर**

**मंत्री द्वय श्री कुशवाह व श्री तोमर की मौजूदगी एवं सांसद श्री भारत सिंह की अध्यक्षता में हुई विकास कार्यों की समीक्षा बैठक भारत सरकार की योजनाओं के तहत मंजूर हुए विकास कार्यों एवं पेयजल परियोजनाओं की हुई समीक्षा**

**सांसद श्री कुशवाह हर शनिवार को शहर के बड़े-बड़े प्रोजेक्ट का करेंगे निरीक्षण**

ग्वालियर शहर के सुनियोजित विकास के लिये मंजूर हुए सभी बड़े प्रोजेक्ट समय-सीमा में पूरे किए जाएँ। निर्माण एजेंसी (ठेकेदार) की ढ़िलाई की वजह से कार्यों में देरी होने पर संबंधित ठेकेदार पर पेनल्टी लगाई जाए। साथ ही संबंधित विभाग के अधिकारियों की जवाबदेही भी तय हो। यह बात सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह ने उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह और ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर की विशेष मौजूदगी में आयोजित हुई विकास कार्यों की समीक्षा बैठक में कही।

सांसद एवं मंत्री द्वय ने विभागीय अधिकारियों से कार्यों को पूरा करने के लिये समयबद्ध कार्ययोजना मांगी है। विभागीय अधिकारियों से कहा गया कि कार्ययोजना में स्पष्ट उल्लेख हो कि किस माह में कितना कार्य किया जायेगा। सांसद श्री कुशवाह ने कहा कि वे हर शनिवार को विभागीय अधिकारियों के साथ शहर के बड़े प्रोजेक्ट का निरीक्षण करेंगे, जिससे भारत सरकार की मंशा के अनुरूप सभी प्रोजेक्ट समय-सीमा में व गुणवत्ता के साथ पूरे कराए जा सकें। सांसद श्री कुशवाह की अध्यक्षता में आयोजित हुई इस बैठक में खासतौर पर भारत सरकार की योजनाओं के तहत ग्वालियर शहर में मंजूर हुए बड़े-बड़े विकास कार्यों एवं जल जीवन मिशन के तहत ग्रामीण अंचल में मूर्तरूप ले रहीं नल-जल योजनाओं की समीक्षा की गई। जिन विकास कार्यों की समीक्षा हुई उनमें एलीवेटेड रोड़, रेलवे स्टेशन का उन्नयनीकरण, चंबल पेयजल परियोजना, अमृत-2, प्रस्तावित वेस्टर्न बायपास, आगरा-ग्वालियर सिक्स लेन एक्सप्रेस-वे व ठाठीपुर पुनर्घनत्वीकरण योजना सहित अन्य विकास कार्य शामिल हैं। शनिवार को यहाँ कलेक्ट्रेट के सभागार में आयोजित हुई बैठक में विधायकगण सर्वश्री मोहन सिंह राठौर, सुरेश राजे, सतीश सिकरवार व श्री साहब सिंह गुर्जर, जिला पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती दुर्गेश कुँवर सिंह जाटव, नगर निगम सभापति श्री मनोज तोमर, भाजपा जिला अध्यक्ष शहर श्री अभय चौधरी व ग्रामीण श्री कौशल शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण मौजूद थे। साथ ही कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान, नगर निगम आयुक्त श्री हर्ष सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार व अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार सहित सभी संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। सांसद श्री भारत सिंह एवं मंत्री द्वय श्री कुशवाह व श्री तोमर ने एलीवेटेड रोड़ के कार्य में तेजी लाने पर विशेष जोर दिया। साथ ही कहा कि एलीवेटेड रोड़ के द्वितीय चरण के काम को निर्बाध रूप से जारी रखने के लिये समय से भू-अर्जन की कार्रवाई पूरी कराएँ। इसमें कोई ढ़िलाई न हो। एलीवेटेड रोड़ के प्रथम चरण के कार्य में तेजी लाने के निर्देश भी बैठक में दिए गए। ज्ञात हो स्वर्ण रेखा नदी पर फोरलेन एलीवेटेड फ्लाईओवर रोड़ का निर्माण किया जा रहा है। लगभग 447 करोड़ रूपए की लागत से एलीवेटेड रोड़ का प्रथम भाग ट्रिपल आईटीएम के समीप से लक्ष्मीबाई समाधि और लगभग 926 करोड़ 21 लाख रूपए की लागत से द्वितीय भाग लक्ष्मीबाई समाधि से गिरवाई पुलिस चौकी तक किया जा रहा है। द्वितीय चरण के कार्य के भी टेण्डर हो चुके हैं। अक्टूबर माह में द्वितीय चरण का कार्य भी शुरू हो जायेगा। ग्वालियर शहर की दीर्घकालिक पेयजल आपूर्ति योजना चंबल प्रोजेक्ट की समीक्षा के दौरान बैठक में बताया गया कि इस प्रोजेक्ट का काम दो साल के भीतर पूरा होगा। लगभग 917 करोड़ रूपए की लागत की इस परियोजना से वर्ष 2055 तक ग्वालियर शहर की पेयजल आपूर्ति हो सकेगी। सांसद श्री कुशवाह ने शहर के नए वार्डों (61 से 66) में भी पेयजल व्यवस्था सुदृढ़ करने पर बल दिया। बैठक में अमृत-2 सहित शहर की अन्य पेयजल परियोजनाओं की समीक्षा की गई। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि लश्कर क्षेत्र की बस्तियों की पेयजल व्यवस्था को और मजबूत करने के निर्देश दिए। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने पेयजल आपूर्ति की ठोस कार्ययोजना बनाने पर बल दिया, जिससे बस्तियों के आखिरी छोर पर बसे घरों तक पेयजल की आपूर्ति हो सके। बैठक में जानकारी दी गई कि आगरा-ग्वालियर सिक्स लेन एक्सप्रेस हाईवे के टेण्डर हो चुके हैं। लगभग 88 किलोमीटर लम्बाई में इस एक्सप्रेस-वे का निर्माण होगा। बैठक में वेस्टर्न बायपास व ठाठीपुर पुनर्घनत्वीकरण योजना सहित ग्वालियर शहर के विकास से संबंधित अन्य बड़े प्रोजेक्ट की समीक्षा भी की गई। साथ ही ककैटो-पहसारी से तिघरा जलाशय और हनुमान व वीरपुर बाँध भरने की परियोजनाओं की भी बैठक में समीक्षा हुई।

**रेलवे स्टेशन के उन्नयनीकरण कार्य में तेजी लाने पर जोर** सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह ने रेलवे स्टेशन के उन्नयनीकरण कार्य में तेजी लाने पर विशेष बल दिया। लगभग 534 करोड़ रूपए की लागत से रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास व सौंदर्यीकरण किया जा रहा है।

# नए कानून के तहत ग्वालियर जिले में जारी हुआ पहला प्रतिबंधात्मक आदेश

**ऐतिहासिक एवं सार्वजनिक भवनों पर वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी व रील शूटिंग पर लगा प्रतिबंध**

**ग्वालियर**

**जिला दण्डाधिकारी श्रीमती चौहान ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के तहत आदेश जारी कर लगाया प्रतिबंध**

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता - 2023 की धारा-163 के तहत ग्वालियर जिले में पहला प्रतिबंधात्मक आदेश जारी हुआ है। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने धारा-163 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी कर ऐतिहासिक इमारतों, रेलवे स्टेशन, बस स्टेण्ड, न्यायालयों, शासकीय कार्यालयों एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों व पार्कों में बगैर अनुमति के वीडियोग्राफी, रील शूटिंग एवं फोटोग्राफी इत्यादि पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। परिवार के साथ या व्यक्तिगत रूप से शालीनतापूर्वक फोटो व वीडियो लेने पर यह आदेश प्रभावशील नहीं होगा। लेकिन दीवार व ऐसे अन्य स्थान पर खड़े होकर फोटो व सेल्फी इत्यादि लेते की मनाही रहेगी, जहां पर खुद को या किसी दूसरे की सुरक्षा को खतरा पैदा होता हो। आदेश के उल्लंघन की दशा में संबंधित के खिलाफ भारतीय न्याय संस्था 2023 की धारा-223 एवं अन्य सायबर विधियों के अंतर्गत दण्डात्मक कार्रवाई की जायेगी। ज्ञात हो पहले भारतीय दण्ड विधान की धारा-144 के तहत इस तरह के प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए जाते थे। हाल ही में देश में तीन नए कानून लागू हुए हैं, जिसमें भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता भी शामिल है। प्रतिबंधात्मक आदेश में स्पष्ट किया गया है कि प्रतिबंधित स्थलों पर यदि कोई व्यक्ति या संस्था व संगठन वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी व शूटिंग करना चाहता है तो उसे पूर्व में लिखित अनुमति लेनी होगी। अनुमति प्राप्त करने के लिये शूटिंग/वीडियोग्राफी का उद्देश्य तथा उसके कंटेंट सहित लिखित आवेदन पत्र संबंधित विभाग को देना होगा। विभाग द्वारा दी गई अनुमति की लिखित सूचना पुलिस अधीक्षक एवं संबंधित एसडीएम को तीन दिन पूर्व अनिवार्यतः देनी होगी। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती चौहान के संज्ञान में यह बात आई थी कि जिले की ऐतिहासिक इमारतों, रेलवे स्टेशन, बस स्टेण्ड, शासकीय कार्यालयों एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों व पार्कों पर बिना किसी पूर्व सूचना एवं अनुमति के कतिपय व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा वीडियोग्राफी, रील शूटिंग एवं फोटोग्राफी की जा रही है। इन लोगों को इमारत व स्थल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सौंदर्यीकरण से कोई सरोकार नहीं रहता। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिये लोगों द्वारा अमर्यादित आचरण कर फोटोग्राफी/वीडियो रील बनाई जाती हैं और उन्हें इलेक्ट्रोनिक व सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल किया जाता है, इससे आम जन एवं पर्यटकों के दिल-दिमाग में ग्वालियर जिले की छवि धूमिल होती है। हाल ही में कलेक्टर कार्यालय भवन की सीढ़ियों पर ऐसी ही एक रील फिल्माई गई थी, जिसका कई संगठनों द्वारा विरोध जताते हुए ज्ञापन प्रस्तुत किए गए थे। इस बात को संज्ञान में लेकर कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी ने इस प्रकार की गतिविधियों को रोकने के लिये प्रतबंधात्मक आदेश जारी किया है।ये हैं तीन नए कानून भारतीय दंड संहिता 1860 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता विधेयक 2023 को लागू किया गया है। इसी तरह दंड प्रक्रिया संहिता 1898 को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता विधेयक 2023 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 के स्थान पर भारतीय साक्ष्य विधेयक 2023 लागू किया गया है। तीनों नए कानून एक जुलाई से प्रभावशील हो गए हैं।

# प्रदेश के 55 महाविद्यालय पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन आज

**बालाघाट**

शासकीय जटाशंकर त्रिवेदी महाविद्यालय अपग्रेड होकर पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय कहलायेगा गृह मंत्री श्री अमित शाह इंदौर में रविवार को प्रदेश के 55 महाविद्यालयों का पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन करेंगे। बालाघाट में भी शासकीय महाविद्यालय जटाशंकर त्रिवेदी महाविद्यालय को पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अपग्रेड किया जाएगा। कार्यक्रम की तैयारियों के सम्बंध में शनिवार को अपर कलेक्टर श्री जीएस धुर्वे ने बैठक कर समीक्षा की। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पीआर चन्देलकर ने कार्यक्रम और तैयारियों से सम्बंधित जानकारी दी। प्राचार्य डॉ. पीआर चन्देलकर ने बताया कि कॉलेज का नाम नही बदला जा रहा है।

बल्कि अपग्रेड किया जा रहा है। अब महविद्यालय पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के नाम से जाना जाएगा। कॉलेज के उद्घाटन के साथ ही तीन प्रकोष्ठ का उद्घाटन भी किया जाएगा जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ, विद्यार्थी पुस्तक सहायता केंद्र प्रकोष्ठ ,विद्या वन प्रकोष्ठ और विद्यार्थियों के लिए बस सेवा को भी हरी झंडी भी दिखाई जाएगी। बैठक में एसडीएम श्री गोपाल सोनी, सीएसपी श्री अंजुल अयंक, नपा सीएमओ श्री निशांत श्रीवास्तव, महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम अधिकारी श्री प्रशांत ठाकुर व अन्य अधिकारी मौजूद रहें।

# विकासखंड, जिला औए राज्य स्तरीय सर्वोत्तम किसान की तैयारियां प्रारम्भ

**बालाघाट**

प्रति वर्ष सब मिशन ऑन एग्रीकल्बर एक्सटेंशन आत्मा अंतर्गत विकासखंड स्तरीय, जिला स्तरीय और राज्य स्तरीय सर्वोत्तम कृषक तथा सर्वोत्तम कृषक समूह को पुरस्कृत किया जाता है। वर्ष 2024-25 के लिए इस पुरस्कार की तैयारी प्रारम्भ हो गई है। मिशन परियोजना संचालक अर्चना डोंगरे ने बताया कि इसके लिए जिले के कोई भी किसान निर्धारित प्रारूप में प्रविष्टियां प्रस्तुत कर सकता है। इसके लिए समस्त विकासखंड के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी और ब्लाक टेक्नालाजी मैनेजर से संपर्क कर सकते है। इसके लिए विभाग का एक निर्धारित प्रारूप है जिसमें किसान व उसके द्वारा की जा रही गतिविधियां आदि की जानकारी भरकर 31 अगस्त 2024 तक कार्यालयीन समय में प्रस्तुत की जा सकती है। साथ आवेदन या निर्धारित प्रारूप को अपने क्षेत्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी से सत्यापित कराना होगा। आवेदन के साथ संबंधित गतिविधियों का प्रमाण (वर्ष 2023-24 के) भी प्रस्तुत कर सकते है। जैसे उपज, विक्रय रसीद, परमिट की छायाप्रति इत्यादि। आवेदन फार्म के साथ कृषक समूह को स्वयं का फोटो मोबाइल नम्बर, दूरभाष नम्बर, बैंक का नाम, ब्रांच का नाम, एकाउंट नम्बर, आई. एफ.एस.सी. कोड, आधार कार्ड की छायाप्रति देना अनिवार्य है।

**सर्वोत्तम किसान चयन की ये है प्रक्रिया, 10, 25 और 50 हजार रुपये तक पुरस्कार** आवेदन बिना साक्ष्य के पाये जाने व अपूर्ण भरे जाने पर समिति द्वारा निरस्त किये जायेंगे। सर्वोत्तम कृषक व समूह का चयन प्रक्रिया जिला स्तर पर कलेक्टर महोदय की अध्यक्षता में समिति तैयार कर समिति द्वारा निर्धारित प्राप्तांकों के आधार पर की जायेंगी। विकासखंड स्तरीय, जिला स्तरीय व राज्य स्तरीय सर्वोत्तम कृषकों हेतु पुरस्कार राशि क्रमशः 10000 (दस हजार रूपये), 25000 (पच्चीस हजार रूपये) व 50000 (पचास हजार रूपये) एवं सर्वोत्तम कृषक समूह हेतु 20000 (बीस हजार रूपये) पुरस्कार का प्रावधान है।

# इमरान खान और पत्नी बुशरा बीबी अवैध विवाह मामले में बरी

## कोर्ट ने सुनाई थी 7 साल की सजा

**पाकिस्तान:** पाकिस्तान की एक अदालत ने शनिवार को पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा खान को अवैध विवाह के आरोपों से बरी कर दिया। उनके वकील नईम पंजुथा ने यह जानकारी दी। अदालत ने रावलपिंडी के गैरीसन शहर में यह फैसला सुनाया। 71 वर्षीय खान और उनकी पत्नी बुशरा खान, जिन्हें बुशरा बीबी के नाम से भी जाना जाता है, को फरवरी में पाकिस्तान के चुनाव से कुछ दिन पहले सात साल की सजा सुनाई गई थी।

उस समय, एक अदालत ने उन्हें बीबी के पिछले विवाह से तलाक और खान से विवाह के बीच आवश्यक अंतराल का पालन न करके इस्लामी कानून तोड़ने का दोषी पाया था। लेकिन इस्लामाबाद के अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायालय के न्यायाधीश अफजल मजोका ने शनिवार को अदालत में घोषणा की कि इमरान खान और बुशरा बीबी दोनों की अपील स्वीकार की जाती है।

खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के प्रवक्ता ने कहा कि आरोपों को खारिज कर दिया गया है, जबकि खान के वकील नईम पंजुथा ने एक्स पर पोस्ट किया कि दंपति बरी हो गए हैं। वकील ने कहा कि अदालत ने गैरीसन शहर रावलपिंडी में यह फ़ैसला सुनाया। आरोप था कि बीबी की पहली शादी से तलाक और खान से शादी के बीच ज़रूरी समय अंतराल का पालन नहीं किया गया।

# मोदी और बिम्सटेक विदेश मंत्रियों ने क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के तरीकों पर की चर्चा

**नई दिल्ली:** बिम्सटेक सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बैठक की और कनेक्टिविटी, ऊर्जा, व्यापार, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, सुरक्षा और लोगों के बीच आदान-प्रदान सहित क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की।

बैठक के दौरान, प्रधानमंत्री मोदी ने बिम्सटेक शिखर सम्मेलन को सफल बनाने के लिए थाईलैंड को पूर्ण समर्थन दिया। विदेश मंत्री एस जयशंकर, केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री (एमओएस) पबित्रा मार्गेरिटा, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल भी बैठक में शामिल हुए।

एक्स पर एक पोस्ट में, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, बिम्सटेक विदेश मंत्रियों से मिलकर खुशी हुई। कनेक्टिविटी, ऊर्जा, व्यापार, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, सुरक्षा और लोगों के बीच आदान-प्रदान सहित क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। सफल शिखर सम्मेलन के लिए थाईलैंड को पूर्ण समर्थन दिया।

# डोनाल्ड ट्रंप पर ताबड़तोड़ गोलीबारी से दहला US

## 1 इंच की चूक... नहीं तो चली जाती ट्रंप की जान

**शिकागो:** अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति एवं रिपब्लिकन पार्टी से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप पर पेनसिल्वेनिया में शनिवार को एक चुनावी रैली में हमला किया गया। हमले में ट्रंप को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है और वह पूरी तरह सुरक्षित हैं। कानून प्रवर्तन से जुड़े अधिकारियों ने यह जानकारी दी। हमलावर को मार गिराया गया है। 'यूएस सीक्रेट सर्विस ने बताया कि शाम करीब 6.15 बजे एक संदिग्ध हमलावर ने पेनसिल्वेनिया के बटलर में रैली स्थल के बाहर एक ऊंचे स्थान से मंच की ओर कई गोलियां चलाईं।

जिसके बाद संघीय एजेंसी के कर्मियों ने ट्रंप को तत्काल वहां से बाहर निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। ट्रंप (78) के प्रवक्ता स्टीवन चेउंग ने एक बयान में कहा,'' वह ठीक हैं और स्थानीय चिकित्सा केन्द्र में उनकी जांच जारी है। चुनाव प्रचार के दौरान ट्रंप पर हुए इस हमले की सभी नेताओं ने निंदा की है। राष्ट्रपति जो बाइडन, उपराष्ट्रपति कमला हैरिस, पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा, जॉर्ज डब्ल्यू बुश और बिल क्लिंटन ने इस हमले की निंदा की है। 'सीक्रेट सर्विस के प्रवक्ता एंथनी गुगेइल्मी ने एक बयान में कहा,'' अमेरिकी सीक्रेट सर्विस के कर्मियों ने हमलावर को मार गिराया। संघीय एजेंसी ने तत्काल सुरक्षात्मक उपाय किए, पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप सुरक्षित हैं।

# असम में बाढ़ के कारण 107 मौतें, 8.4 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित, 1705 गांव जलमग्न

**नेशनल डेस्क:** असम में बाढ़ के कारण एक और व्यक्ति की मौत हो गई वहीं 20 जिलों में 8.4 लाख से अधिक लोग अब भी प्रभावित हैं। एक आधिकारिक बुलेटिन में शनिवार को यह जानकारी दी गई। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एएसडीएमए) की दैनिक बाढ़ रिपोर्ट के अनुसार धेमाजी जिले के गोगामुख राजस्व क्षेत्र में एक व्यक्ति की मौत हो गई। इसके साथ ही इस वर्ष बाढ़, भूस्खलन, तूफान और बिजली गिरने से संबंधित घटनाओं में जान गंवाने वाले लोगों की कुल संख्या 107 हो गई है।

**इन जिलों में 8,40,000 से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित**

रिपोर्ट में कहा गया है कि बारपेटा, कछार, चिरांग, दरांग, धेमाजी, धुबरी, डिब्रूगढ़, ग्वालपाड़ा, गोलाघाट, हैलाकांडी, जोरहाट, कामरूप, कामरूप मेट्रोपॉलिटन, करीमगंज, माजुली, मोरीगांव, नगांव, नलबाड़ी, शिवसागर और दक्षिण सलमारा जिलों में 8,40,000 से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। इसमें कहा गया है कि कछार सबसे अधिक प्रभावित है, जहां लगभग 1.5 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। इसके बाद धुबरी (1.27 लाख) और नगांव (88,500) का स्थान है।

**सड़कें, पुल और अन्य बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा**

शुक्रवार तक राज्य के 23 जिलों में 12.33 लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित थे। प्रशासन 13 जिलों में 221 राहत शिविर और राहत वितरण केंद्र चला रहा है, जिनमें 72,046 विस्थापित लोग शरण लिए हुए हैं। एएसडीएमए ने कहा कि वर्तमान में 1,705 गांव जलमग्न हैं और असम में 39,898.92 हेक्टेयर में लगी फसलें बर्बाद हो गई हैं। बारपेटा, धेमाजी, धुबरी, डिब्रूगढ़, ग्वालपाड़ा, कोकराझार, बोंगाईगांव, कछार, चराईदेव, गोलाघाट, मोरीगांव, नगांव और शिवसागर में बाढ़ के पानी से तटबंध, सड़कें, पुल और अन्य बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा है।

वर्तमान में ब्रह्मपुत्र नदी निमाटीघाट, तेजपुर और धुबरी में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। इसकी सहायक नदियां भी खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। एएसडीएमए ने कहा कि बराक नदी की सहायक नदी कुशियारा भी करीमगंज शहर में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है।

### अमेरिकन एयरलाइंस में लैपटॉप बनने वाला था बम

# धुआं उठने पर आनन-फानन में खाली कराना पड़ा विमान

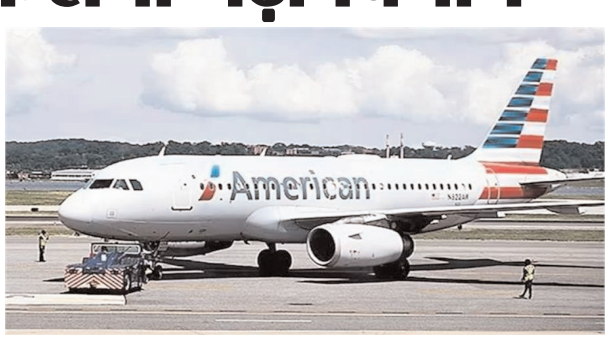


**नेशनल डेस्क:** सैन फ्रांसिस्को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा से मियामी जा रही अमेरिकन एयरलाइंस की एक उड़ान में एक यात्री के बैग में रखे लैपटॉप से धुआं निकलने के कारण विमान को खाली कराना पड़ा। एयरलाइन ने बताया कि विमान से बाहर निकलते समय एक व्यक्ति को मामूली चोटें आईं, जिसके बाद उसे अस्पताल ले जाया गया। यात्रियों को आपातकालीन 'स्लाइड और 'जेट ब्रिज के जरिए बाहर निकाला गया। सैन फ्रांसिस्को अग्निशमन विभाग के अनुसार, दो और यात्रियों को भी मामूली चोटें आईं। एयरलाइन ने बताया कि यात्री जब विमान में सवार हो रहे थे, तभी चालक दल को लैपटॉप से धुआं निकलने की सूचना मिली। संघीय विमानन प्रशासन के प्रवक्ता स्टीव कुलम ने कहा कि एजेंसी मामले की जांच करेगी।

# वियतनाम के उत्तरी पर्वतीय इलाके में भूस्खलन, 11 लोगों की मौत

**हनोई:** वियतनाम के उत्तरी प्रांत हा गियांग में शनिवार सुबह भूस्खलन से दबकर एक मिनीबस में सवार कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। वियतनाम समाचार एजेंसी के ताजा अपडेट में यह जानकारी दी गई। जब बाक मी जिले में एक सड़क पर भूस्खलन के कारण वाहन फंस गया, तो उसमें सवार सभी लोग मदद के लिए बाहर निकल आए।

बताया जा रहा है कि मिनीबस में लगभग 16 लोग सवार थे।इसी दौरान ऊपर से हजारों घन मीटर मिट्टी सड़क पर आ गई, जिससे सभी लोग दब गए। राष्ट्रीय जल-मौसम पूर्वानुमान केंद्र के अनुसार, जिस क्षेत्र में दुर्घटना हुई, वहां शुक्रवार शाम 7 बजे से शनिवार सुबह 7 बजे तक तक 280-290 मिमी बारिश दर्ज की गई।

# अनंत-राधिका के आशीर्वाद समारोह में अमिताभ बच्चन समेत देश-विदेश की कई हस्तियां पहुंचीं

**मुंबई:** नवविवाहित अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के आशीर्वाद समारोह में शनिवार को बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन, शाहिद कपूर और माधुरी दीक्षित समेत देश-विदेश की मशहूर हस्तियों ने शिरकत की। सुपरस्टार सलमान खान, शाहरुख खान, अभिनेता युगल आलिया भट्ट और रणबीर कपूर भी आशीर्वाद समारोह में सज-धजकर पहुंचे।

इस समारोह में अमेरिकी रियलिटी टीवी कलाकार किम करदाशियां और उनकी बहन क्लो करदाशियां भी शामिल हुईं। एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी और उद्योगपति वीरेन मर्चेंट की बेटी राधिका मर्चेंट शुक्रवार को मुंबई में एक भव्य समारोह में परिणय सूत्र में बंध गये थे। आशीर्वाद समारोह मुंबई के जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में हो रहा है।

अमिताभ बच्चन रंग-बिरंगा कुर्ता-पायजामा और शॉल ओढ़कर समारोह में पहुंचे। इस दौरान, उनकी नातिन नव्या नंदा और दामाद निखिल नंदा भी उनके साथ थे। ऐश्वर्या राय बच्चन आराध्या बच्चन के साथ कार्यक्रम स्थल पर पहुंचीं। शाहरुख खान अपनी पत्नी गौरी खान, बेटी सुहाना खान और सास सविता छिब्बर के साथ 'ग्रीन कार्पेट% पर नजर आए। सलमान खान नीले रंग के सूट में पहुंचे।

सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो के अनुसार, करदाशियां बहनों ने शनिवार के कार्यक्रम के लिए तरूण तहिलियानी द्वारा डिजाइन किए गए परिधान और आभूषणों को चुना। किम ने सुंदर कढ़ाईदार साड़ी पहन रखी थी जबकि क्लो गुलाबी लहंगा चोली में नजर आईं।

अभिनेता अर्जुन कपूर बंदगला सूट पहनकर समारोह में पहुंचे। फिल्म निर्माता करण जौहर अपने दोस्त और 'धर्मा प्रोडक्शंस% बैनर के सीईओ अपूर्व मेहता के साथ नजर आए। माधुरी दीक्षित नेने अपने पति श्रीराम नेने के साथ पहुंचीं और रजनीकांत भी अपनी पत्नी लता के साथ दिखाई दिये।

वेंकटेश, जैकी श्रॉफ, हेमा मालिनी, काजल अग्रवाल, विधु विनोद चोपड़ा, सुनील शेट्टी, शाहिद कपूर, सारा अली खान, रश्मिका मंदाना, शनाया कपूर, दिशा पटानी, पुनीत मल्होत्रा, संजय दत्त पत्नी मान्यता दत्त के साथ आशीर्वाद समारोह में शामिल हुए। इस कार्यक्रम में रितेश देशमुख और जेनेलिया देशमुख, राम चरण और उपासना कोनिडेला, जान्हवी कपूर, शिखर पहाड़िया, खुशी कपूर, वेदांग रैना, ओरी और अनन्या पांडे शामिल हुए। रविवार को एक भव्य 'रिसेप्शन के साथ समारोह जारी रहेगा।

# चंडीगढ़ आएंगी वित्त मंत्री सीतारमण, प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में लेंगी हिस्सा...

**नेशनल डेस्क:** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की वरिष्ठ नेता एवं केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण रविवार को चंडीगढ़ भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता करेंगी। बैठक में पार्टी के सभी कार्यकारिणी सदस्य शामिल होंगे तथा महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा कर भविष्य की रणनीति तय की जाएगी।

उधर, केंद्रीय गृह मंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता अमित शाह महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले 14 जुलाई को पुणे में पार्टी की एक बैठक को संबोधित करेंगे। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले यह बैठक महत्वपूर्ण होगी। विधानसभा चुनाव इस साल अक्टूबर में होने की संभावना है।

**त्रिपुरा में पंचायत चुनाव से पहले माकपा नेता की हत्या, आज रायव्यापी बंद का आह्वान**

दक्षिण त्रिपुरा के राजनगर क्षेत्र में हुए हमले में गंभीर रूप से घायल मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) नेता बादल शिल की शनिवार को एक अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। विपक्षी माकपा ने आरोप लगाया कि पंचायत चुनाव में जिला परिषद पद के लिए उम्मीदवार शिल की हत्या भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) समर्थित गुंडों ने की है। माकपा ने इसके विरोध में रविवार को 12 घंटे का रायव्यापी बंद बुलाया है।

**जगन्नाथ मंदिर का रत्न भंडार 46 साल बाद आज फिर से खोले जाने की संभावना**

ओडिशा सरकार पुरी में भगवान जगन्नाथ मंदिर के रत्न भंडार को 46 साल बाद रविवार को खोलेगी ताकि आभूषणों और अन्य मूल्यवान सामानों की सूची बनाई जा सके। रत्न भंडार आखिरी बार 1978 में खोला गया था।

**पीयूष गोयल आज से एफ्टा, जी 7 बैठकों के लिए स्विटरजरलैंड , इटली की यात्रा पर**

भारत के वाणिय एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल जी7 देशों के व्यापार मंत्रियों की बैठक के सम्पर्क कार्यक्रम में भाग 16-17 जुलाई तक इटली की यात्रा पर होंगे।यह सम्मेलन वहां रेजियो कैलाब्रिया में होने जा रहा है।

केरल के विभिन्न हिस्सों में बारिश, मौसम विभाग ने चार जिलों के लिये जारी किया 'ऑरेंज अलर्ट

तिरुवनंतपुरम, 13 जुलाई (भाषा) केरल के विभिन्न हिस्सों में भारी बारिश के बीच भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने शनिवार को राय के तीन उत्तरी जिलों में दिन के लिए 'ऑरेंज अलर्ट जारी किया। आईएमडी ने कोझिकोड, कन्नूर और कासरगोड में 'ऑरेंज अलर्ट और प्रदेश के नौ अन्य जिलों के वास्ते दिन के लिये 'येलो अलर्ट जारी किया है।

**असम में बाढ़ के कारण 107 मौतें, 8.4 लाख से यादा लोग प्रभावित, 1705 गांव जलमग्न**

असम में बाढ़ के कारण एक और व्यक्ति की मौत हो गई वहीं 20 जिलों में 8.4 लाख से अधिक लोग अब भी प्रभावित हैं। एक आधिकारिक बुलेटिन में शनिवार को यह जानकारी दी गई। असम राय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एएसडीएमए) की दैनिक बाढ़ रिपोर्ट के अनुसार धेमाजी जिले के गोगामुख राजस्व क्षेत्र में एक व्यक्ति की मौत हो गई। इसके साथ ही इस वर्ष बाढ़, भूस्खलन, तूफान और बिजली गिरने से संबंधित घटनाओं में जान गंवाने वाले लोगों की कुल संख्या 107 हो गई है।

**दिन-रात मेहनत कर पत्नी को बनाया सिंगर, फेमस होते ही पति को छोड़ा**

उत्तर प्रदेश के लखनऊ से एक बेहद ही रोचक और हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां एक पति ने दावा किया है कि उसने अपनी पत्नी की सिंगर बनने की इच्छा को पूरा करते हुए उसके लिए पाई-पाई जोड़ कर उसकी मदद की, लेकिन जब उसकी पत्नी सिंगर बनने के बाद फेमस हो गई तो उसने अपने पति को छोड़ दिया।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती ज्योती मिश्रा द्वारा कॉम्पेक प्रिंटर्स प्रा. लि. फ्री प्रेस हाउस 3/54, प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 45ए गुप्ता चैम्बर पहली मंजिल जावरा कंपाउंड इंदौर, (म.प्र.) से प्रकाशित।
प्रधान सम्पादक : अशीष मिश्रा आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक : एमपी/एच/आइएन 2009/34385 फोन नं : 0731-4202569 फैक्स नं : 0731-4202569